

चन्द्रामासा

माँ - बच्चों का मासिक पत्र



1st Dec. '56

8

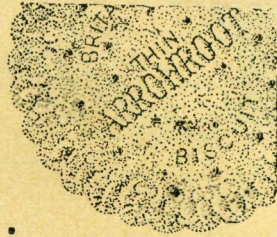
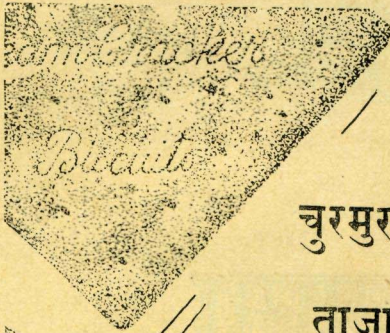
M.T.V. Acharya



पुरस्कृत
परिचयोक्ति

जले ज्योति, छाये उजियाली !

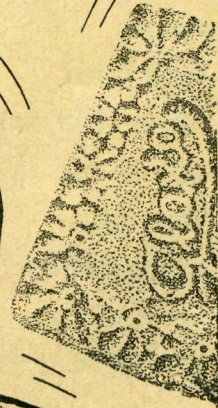
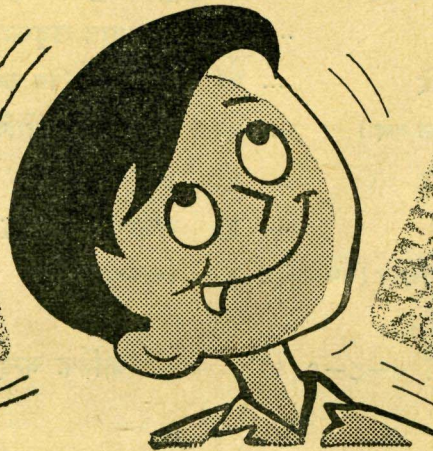
प्रेषक :
श्री प्रभुदयाल बगडिया, उमरिया



चुरमुरा...

ताजा...

स्वादिल...



BBX 33 HIN

चन्द्रामासा

दिसम्बर १९५६

विषय - सूची

सम्पादकीय	 १	पुजारी की उदारता	 ४१
मुख-चित्र	... २	औआ और उल्लू	 ४७
स्वप्नों का अर्थ (जातक कथा)	३	बताओगे	 ४८
भयंकर देश-१७ (धारावाहिक)	९	भुवन-सुन्दरी (धारावाहिक)....	४९
धर्मनगर	 १७	कामयाब लड़का	 ५७
आँखों के तारे	 २१	मित्र-भेद (पद्य कथा)	 ६३
धनंजय (बिताल कथा)	 २२	फोटो परिचयोक्ति	 ६७
बीरू की बही	 २८	जादू के प्रयोग	 ६८
खराब मुहूर्त	 ३३	समाचार वगैरह	 ७०
नाविक सिन्दबाद (धारावाहिक)	३४	चित्र-कथा	 ७२

एक प्रति रु. ०-८-०

वार्षिक चन्द्रा रु. ६-०-०

यह लो तुम्हारा
अशोका



अशोका पेन वर्क्स
तेनाकी
आन्ध्र

मधुर सुगंधवाला....



- ★ बाल सदा काले रखने के लिए ।
- ★ दिमाग को ठंडक पहुँचाने के लिए ।
- ★ लोमा ही खरीदें ।

सोल एजेंट्स : एम्. एम्. खंभातवाला
रायपुर :: अहमदाबाद - १

‘ए’ पिल्स

रात में बच्चों को असमय में पेशाब की ज़रूरत पड़ती है। ‘ए’ पिल्स के उपयोग करने से शारीरिक व मानसिक हानि नहीं होती।

१०० गोलियाँ—रु. ३। में।

प्रति दिन दो गोलियाँ सवेरे, दुपहर और रात को पानी के साथ देना चाहिए।

डेन टॉनिक

छोटे बच्चों के दाँत बिना कष्ट के निकल आते हैं। बच्चों को अच्छी नींद आ जाती है। भूख लगती है और शौच भी साफ़ होता है।

१५० गोलियाँ : रु. १-८-०.

प्रति दिन तीन गोलियाँ सवेरे, दुपहर और रात को पानी के साथ देना चाहिए।

होमियो लैबरेटरीज़

१७८, न्यू चर्नी रोड, बम्बई - ४

नील दरबार
और
फूलहार
अगरबन्ती



डि. कृष्णमूर्ति

हैक्लास अगरबन्ती मेल्युफायरस
706, चिक्कपेट, बेंगलोर-२

हमेशा अच्छी कलम के लिए
आग्रह कीजिए। वह है :

चेम्पियन

(रजिस्टर्ड)

यह हर जगह मिलनेवाली
उत्तम कलम है।

दाम रु. ३-८-० से लेकर

गुजरात इन्डस्ट्रीज
(प्राइवेट) लिमिटेड, बम्बई - २

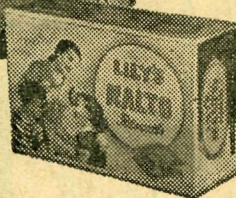
Champion



The Choice of all



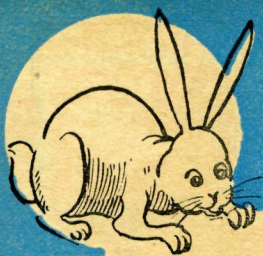
के. टी. डोंगरे एन्ड कम्पनी
प्राइवेट लिमिटेड, बम्बई - ४



लिली की
माल्टो
बिस्कुटें

बच्चों की मनपसन्द की हैं।

LILY BISCUIT CO. PRIVATE LTD., CALCUTTA-4



चन्द्रामामा

संचालक : चक्रपाणी

“चन्द्रामामा” में प्रायः कहानियाँ धारावाहिक रूप से दी जाती रही हैं। इनके अलावा कई कहानियाँ ऐसी भी प्रकाशित होती हैं जो धारावाहिक तो नहीं होतीं पर परस्पर सम्बन्धित होती हैं, जैसे ‘जातक कहानियाँ’। कहानियों के चयन में हमेशा यह प्रयत्न रहता है कि वे सोद्देश्य हों और शिक्षाप्रद भी हों।

धारावाहिक कहानी के चयन में और भी सावधानी बरती जाती है; क्योंकि एक ही कहानी कई मास चलती है और हर मास नयी बातों को देकर उसको अधिक रोचक बनाने का प्रयत्न किया जाता है। इस तरह की कहानी “भयंकर देश” है, जो अब कई मास के प्रकाशन के बाद अगले महीने समाप्त होने जा रही है।

हमने इस बीच एक और लम्बी कहानी “भुवन-सुन्दरी” धारावाहिक रूप में देनी प्रारम्भ कर दी है। हम आशा करते हैं कि ये धारावाहिक कहानियाँ विशेष रूप से आपकी ज्ञानवृद्धि और मनोरंजन कर सकेंगी।

वर्ष : ८

दिसम्बर १९५६

अंक : ४

मुख - चित्र

पाण्डव काम्यक वन से फिर दैत्य वन को वापिस चले गये। जब वे वहाँ थे, तब एक ब्राह्मण ने आकर कहा—“बेटा! जलते ईन्धन को एक बारह-सिंगा अपने सींगों में सुलगाकर कहीं भाग गया है। वह ईन्धन मेरे लिये ला दीजिए।”

तुरत पाँचों पाण्डव धनुष-बाण लेकर उस तरफ गये जिस तरफ बारह-सिंगा भाग गया था। थोड़ी देर बाद वह उन्हें दिखाई दिया। उस पर उन्होंने कई बाण छोड़े, पर उसे एक भी न लगा। उसका पीछा करते करते पाण्डव एक घने जंगल में पहुँचे। तब बारह-सिंहा जाने कहाँ गायब हो गया!

सब थक गये थे। उनको प्यास लग रही थी। नकुल ने पेड़ पर चढ़कर देखा कि पास में ही एक पोखर है। वह पानी लाने के लिए गया। जब पोखर के पानी से वह अपनी प्यास बुझाने को ही था कि आकाशवाणी हुई—“बिना मेरे प्रश्नों का उत्तर दिये यहाँ का पानी नहीं पी सकते।” नकुल ने उस बाणी को अनसुना कर दिया। पानी पीकर वह बेहोश हो गया।

जब नकुल बहुत देर बाद भी न आया तो युधिष्ठिर ने सहदेव को भेजा। वह भी पानी पीकर बेहोश हो गया। तब युधिष्ठिर ने अर्जुन को भेजा। अर्जुन भी पानी पीकर बेहोश हो गया। भीम की भी वही हालत हुई।

अन्त में युधिष्ठिर वहाँ गया। उसे भी आकाशवाणी सुनाई दी। उसने पूछा—“तुम कौन हो? तुम्हारे क्या प्रश्न हैं?” उस आकाशवाणी ने युधिष्ठिर से कई प्रश्न पूछे। युधिष्ठिर ने सब प्रश्नों का ठीक उत्तर दे दिया। तब आकाशवाणी ने खुश होकर कहा—“युधिष्ठिर! मैं तुम्हारे भाइयों में से किसी एक को जिला दूँगा। बताओ किसको जिलाऊँ?”

“महात्मा! क्योंकि कुन्ती के पुत्रों में मैं जीवित हूँ, इसलिये माद्री के पुत्रों में से नकुल को जीवित कर दो।” युधिष्ठिर ने कहा। “मैं तुम्हारी न्यायशीलता को देखकर बहुत खुश हूँ। मैं यक्ष हूँ।” यक्ष प्रत्यक्ष हुआ और बाकी पाण्डवों को जीवित कर अन्तर्धान हो गया।



स्वप्नों का अर्थ

कोशल देश के राजा बिम्बसार को एक दिन रात को बड़े अजीब सपने आये। वे रात भर सो नहीं सके, उन सपनों के बारे में सोचते ही रहे। अगले दिन ब्राह्मणों को बुलवाकर उन्होंने उनको अपने सपनों के बारे में बताया। “इस तरह के सपनों का क्या परिणाम होगा, ज़रा आप लोग सोच कर बताइये?”—राजा ने पूछा।

ब्राह्मणों ने आपस में समझौता कर लिया। उन्होंने राजा के पास से खूब रुपये ऎंठने की सोची। इसलिए उन्होंने राजा के पास जाकर कहा—“महाराज! हमने कितनी ही पोथियाँ पलट डालीं, मालूम होता है कि अपने जो सपने देखे हैं वे बड़े खतरनाक हैं। उनके कारण आपकी, आपके वंश की, राज्य की, और यहाँ तक कि प्रजा की भी बड़ी हानि होगी।”

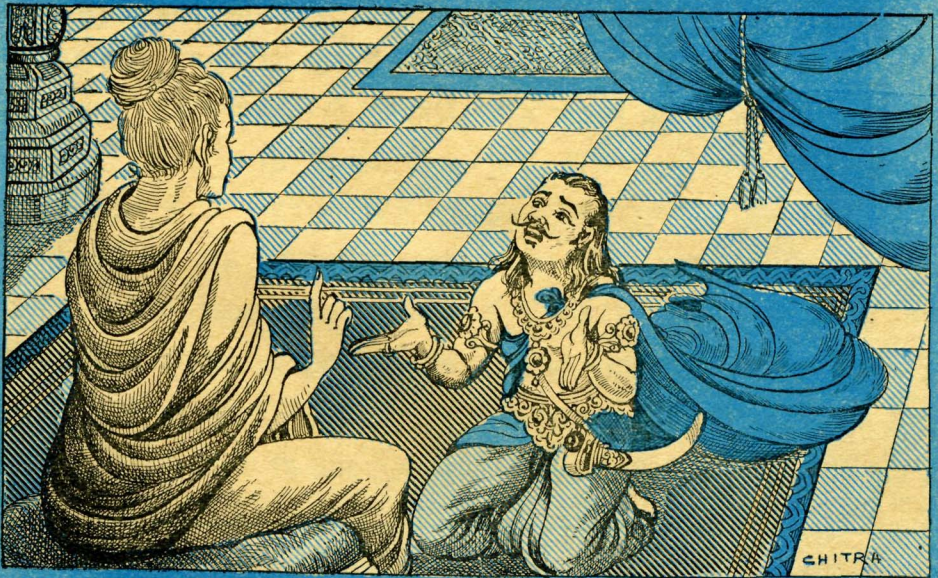
यह सुनकर राजा पागल-सा हो गया। “तो इस हानि को बचाने का क्या उपाय हो सकता है, आप लोग ज़रा सोच-समझकर बतायें”। राजा ने पूछा।

“वह भी हम पता लगाकर आये हैं। एक ही चारा है। राज्य में किसी चौराहे पर एक यज्ञ करवाइये। यज्ञ के बाद ब्राह्मणों को दान-दक्षिणा दिलवाइये। उस तरह सब कष्टों का वर्तमान और आगामी, निवारण हो जायेगा।” ब्राह्मणों ने सहर्ष सलाह दी।

राजा बिम्बसार ने न आगे देखा न पीछे, ब्राह्मणों की बात का विश्वास कर, खजांची को बुलाकर कहा—“किसी चौराहे पर यज्ञ का प्रबन्ध करना है, दान-दक्षिणा भी देनी है इन सब के लिए ज़रूरी इन्तजाम शीघ्र ही करवाइये।”

यह खबर महारानी तक भी पहुँची। को अपने घर भिक्षा के लिए निमंत्रित उन्होंने अपने पति के पास जाकर कहा— किया। बुद्ध भगवान भिक्षा के लिए, “आप जल्दबाजी में यह यज्ञ न शुरू उसकी इच्छानुसार राजधानी में पधारे। कीजिये। सच कहा जाय तो इन ब्राह्मणों तब महाराजा ने बुद्ध भगवान से कहा— को अधिक आता-जाता नहीं है। सब “स्वामी! ऐसा कोई रहस्य नहीं है, कुछ जानने-पहचाननेवाले बुद्ध भगवान जिसके बारे में आप न जानते हों। मुझे चेतवन में हैं। उनको अपने सपनों के कुछ अजीब सपने आये थे....उनका क्या परिणाम होगा....आप कृपया बताने का बारे में कहिये और पूछिये कि उनका परिणाम क्या होगा। यदि वे यज्ञ करने कष्ट करें।” के लिए कहें तो करवाइये।”

“सपने बताओगे तो बता सकूँगा कि राजा बिम्बसार भी यह मान गये। उनका क्या परिणाम होगा?” राजा की उन्होंने स्वयं चेतवन जाकर बुद्ध भगवान नादानी देखते हुए बुद्ध भगवान ने कहा।



“पहिले-पहल मैंने स्वप्न में चार सांडों को देखा। वे कूदते-फाँदते, झगड़ते भयंकर रूप से, राज महलके आँगन में आये। उनको लड़ता-झगड़ता देखने के लिए लोगों के झुण्ड के झुण्ड जमा हो गये। परन्तु उनको जमा होता देख सांड बिना लड़े इधर उधर चले गये। इसका क्या अर्थ है?” महाराजा ने पूछा।

हुए आयेंगे और बिना बरसे चले जायेंगे। उन पर आस लगाये बैठी प्रजा बहुत ही निराश होगी।” बुद्ध भगवान ने राजा से कहा।

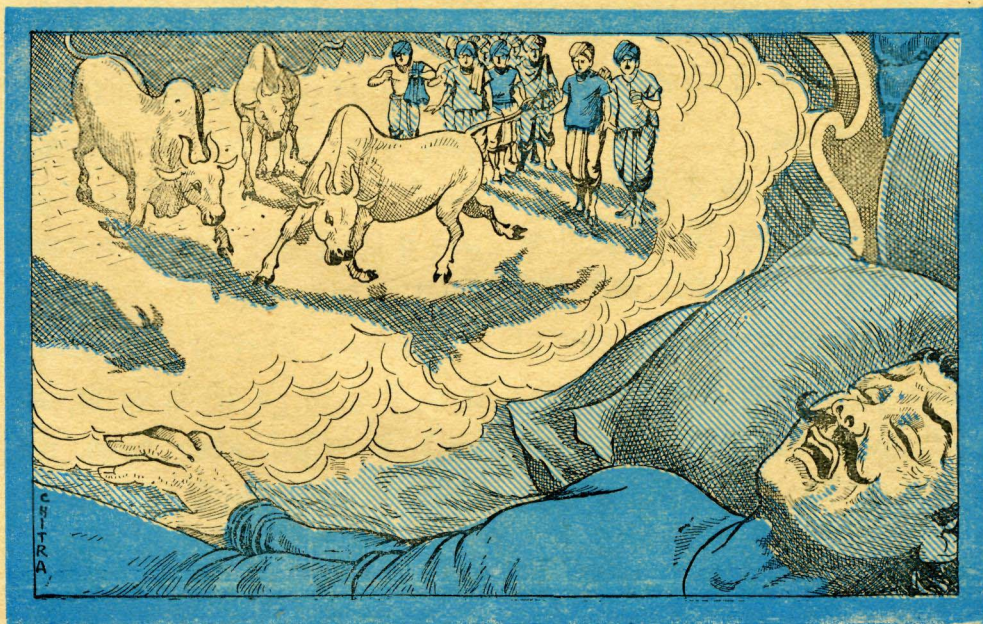
“फिर मैंने एक और विचित्र बात देखी। भूमि में से पेड़-पौधे उत्पन्न हुए, पर बिना बहुत बड़े हुए ही, वे फलने फूलने लगे। इसका क्या मतलब है?”

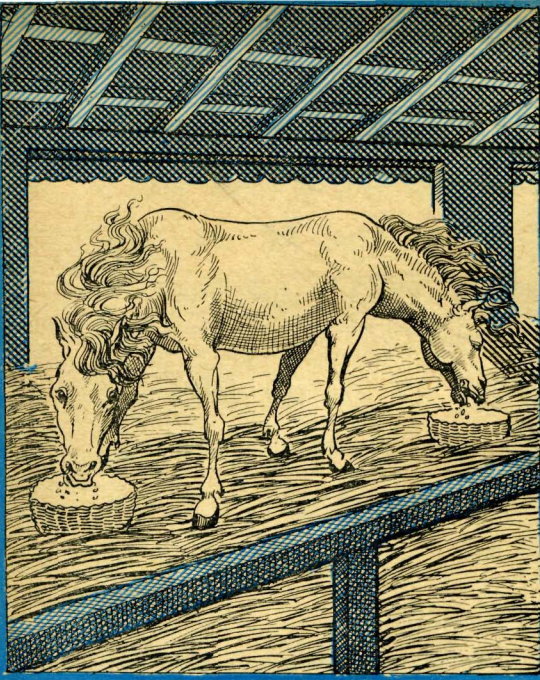
महाराजा ने पूछा।

“राजा! इस स्वप्न का सम्बन्ध न तुम से है न तुम्हारी पीढ़ी से ही। आनेवाले युगों में राजा पाप करने लगेंगे। उनके शासन में अन्याय होंगे, तब बादल गरजते

महाराजा ने पूछा।

“मैंने जिस सपने के बारे में अभी कहा था, उस युग में स्त्रियाँ छुटपन में ही ब्याह दी जायेंगी। वे छुटपन में ही,





माँ बन जायेंगी। इसके सिवाय और कोई दूसरा अर्थ नहीं है।” भगवान बुद्ध ने कहा।

“मुझे एक यह भी सपना आया कि गौएँ बछड़ों का दूध पी रही हैं।” महाराज ने आश्चर्य से कहा।

“इसका मतलब यह है कि ऐसे दिन भी आनेवाले हैं जब कि बड़े-बुजुर्गों को जीवन निर्वाह के लिए छोटी छोटी बातों के लिए छोटों पर आधारित होना पड़ेगा।” भगवान बुद्ध ने कहा।

“फिर मैंने सपने में कुछ किसानों को देखा कि वे जुआ में से बैलों

को हटाकर बछड़ों को जोत रहे हैं।” राजा ने कहा।

“मैंने पहिले जिस युग की बात कही है उसमें राजा, समर्थ, वयोवृद्ध, अनुभवी मन्त्रियों को हटाकर, मूर्ख धूर्त नौजवानों को नियुक्त करेंगे। इस सपने का मतलब यही है।” बुद्ध भगवान ने कहा।

“फिर मैंने एक अजीब घोड़ा देखा। उसके आगे पीछे दो सिर थे। दोनों मुखों से वह दाना खा रहा था। यह भी क्या बात है? ज़रा बताइये स्वामी?” राजाने पूछा।

“आनेवाले बुरे काल में न्यायाधिकारी निष्पक्ष न्याय नहीं करेंगे, दोनों पक्षों से घूस लेंगे। इसका मतलब यह ही है।” बुद्ध भगवान ने कहा।

“यह बताइये क्या है, कोई मोटी रस्सी बुनता हुआ, बुनी रस्सी को नीचे फेंक देता है, और एक लोमड़ी उसे खाती मुझे सपने में दिखाई दी। इसका क्या मतलब है?” महाराजा ने पूछा।

“आनेवाले ज़माने में पाप बढ़ेगा। मेहनत से कमाये हुए पति के धन को, उस ज़माने में, पत्नियाँ हमेशा फिजूल खर्च करेंगी।” भगवान बुद्ध ने कहा।



“ फिर मैंने एक और अजीब बात देखी । राज महल के पास एक बड़े कलश में पानी भरा पड़ा है । उसके आस-पास कितने ही खाली बर्तन हैं । वहाँ, हर जाति के लोग घड़ों में पानी लाते और भरे हुए कलश में ही पानी उँडेल जाते । उनको इसकी भी परवाह न थी कि भरे कलश में से पानी बाहर छलक रहा था, खाली बर्तन में कोई एक बुँद पानी भी न डालता । इसका क्या अर्थ हो सकता है, बताइये स्वामी । ”

“ समय के साथ अधर्म भी बढ़ता जायेगा । प्रजा अपनी मेहनत की कमाई से राजा का खजाना भरेगी । इधर एक तरफ तो खजाना भर रहा होगा और उधर लोगों के घर खाली बर्तनों की तरह खाली होते चले जायेंगे । ” बुद्ध भगवान ने समझाकर कहा ।

“ एक सपने में, मैंने एक बर्तन में चावल उबलते देखे । चावल सब जगह एक से नहीं पक रहे थे । एक जगह ज्यादा उबल कर चावल की लेई सी हो गई थी । एक जगह चावल ठीक उबला था । और दूसरी जगह चावल



चावल ही रहा । बिल्कुल नहीं उबला । ” महाराजा ने कहा ।

“ आनेवाले ज़माने में खेती इसी तरह की होगी । शासक अनावृष्टि और बाढ़ आदि के बारे में विशेष ध्यान न देंगे । इसलिये अतिवृष्टि के कारण किसी जगह बाढ़ आयेगी, और फसलें खराब होंगी । और ऐसी जगह जहाँ वर्षा ऋतु के अनुसार ठीक समय में होगी, वहाँ खेती ठीक होगी । जहाँ वर्षा नहीं होगी, वहाँ खेती भी न होगी । ” बुद्ध भगवान ने महाराजा से कहा ।





“स्वामी! एक और सपने में मैंने यह देखा कि कुछ मनुष्य बहुमूल्य चन्दन को गली में बेच रहे हैं और पैसे ले रहे हैं।” महाराजा ने कहा।

“भविष्य में कुछ नीच व्यक्ति, पवित्र धर्मोपदेश देकर, बदले में तुच्छ इहलौकिक सामग्री जमा करेंगे।” बुद्ध ने कहा।

“मैंने सपने में यह भी देखा कि पानी में बड़े बड़े पत्थर तैर रहे हैं। राज-हंस के झुण्ड को एक कौवे के पीछे भी चलते देखा। जब बकरियाँ शेरों को मार कर खा रही थीं तो भेड़िये तक डर से काँप रहे थे। क्या ये सब हानिसूचक स्वप्न नहीं हैं स्वामी?” महाराजा ने पूछा।

“ये स्वप्न न तुम्हारे से सम्बन्धित हैं, न तुम्हारे युग से ही। उनके बारे में तुम्हें फिक्र ही नहीं करनी चाहिये। ये सब भविष्य से सम्बन्ध रखती हैं। क्योंकि

आगामी काल में अधर्म बढ़ेगा, इसलिये बड़े बड़े लोग राजाओं के कोप भाजन हो कर, काल प्रवाह में, तुम्हारे देखे हुए बड़े बड़े पत्थरों की तरह बह जायेंगे। जब परम नीच पदासीन हो जायेंगे तो राज-हंस जैसे योग्य पुरुषों को भी उनके पद चिन्हों पर चलना पड़ेगा। जब अधमों के हाथ में शासन की बागडोर आयेगी तो भलमानस भी उनको देखकर घबरायेंगे। यही नहीं उन भलमानसों को उनकी भल-मनसाहत के कारण, वे अधम अधिकारी निर्मूल नष्ट भी कर देंगे।” बुद्ध भगवान ने कहा।

राजा बिम्बसार का सन्देह जाता रहा। उनका भय भी दूर हो गया। उसने यज्ञों का प्रबन्ध बन्द करवा दिया और बुद्ध भगवान को भिक्षा देकर सादर भिजवा दिया।





[१७]

[समुद्रकेतु के डाकुओं से थोड़ी देर मुक्ताबला करके, शिवदत्त अपने साथियों के साथ जंगल में भाग गया था। वहाँ उनको देवमाया नाम की स्त्री दिखाई दी। उसके द्वारा, शिवदत्त को मकरमण्डल के बारे में मालूम हुआ। वज्रमुष्टि दो आदमियों के साथ पहिले गया। उसको समुद्रकेतु के गुट के कुछ डाकू दिखाई दिये। बाद में—]

वज्रमुष्टि ने झील की परली तरफ से आते हुए अट्टहास को सुनकर अपने अनुयायियों की ओर मुड़कर कहा—

“हो सकता है, वह समुद्रकेतु के डकैतों की टोली हो। कोई भी हों, इतना ज़रूर है कि वे पी-पाकर होइला कर रहे हैं। आप लोग यहीं ठहरिये, मैं देखकर आता हूँ।” वह रेंगता रेंगता झील के किनारे पहुँचा और बड़ी सावधानी से किनारे पर लगे एक तमेड़ पर चढ़ गया।

थोड़ी देर में वह परली तरफ पहुँच गया। उसने तमेड़ को किनारे के एक पेड़ से बाँध दिया। एक सपाट जगह पर, दस-ग्यारह समुद्रकेतु के डाकू अपने हथियार एक तरफ रख, खूब पीकर शोर-शरावा कर रहे थे। चिल्ला चिल्लाकर गा-नाच रहे थे। उनको मारने के लिए, वज्रमुष्टि को यही अच्छा मौका लगा। वह यकायक पेड़ों के झुरमुट में से आगे कूदा और “जय कलिकेय” कहता तलवार निकालकर उन पर लपका।

‘चन्द्रामामा’



था। वह जानता था कि अगर एक डाकू भी बचकर वहाँ से भाग निकला तो परिणाम अच्छा नहीं होगा।

वज्रमुष्टि “जय कालिकेय” चिलाता हुआ उस डाकू के पीछे भागा। वह बेहथियार तो था ही, फिर उसने पी रखी थी। इसलिए लड़खड़ा रहा था। मुड़कर भयंकर वज्रमुष्टि की शक देखते ही वह बहुत डर गया और “अरे बापरे बाप मरा” चिलाता हुआ वह तुरत झील में जा कूदा।

वज्रमुष्टि झील में कूदना ही चाहता था कि एक मगर, ताड़ की तरह ऊपर तैरता हुआ बड़ी तेज़ी से आया और डाकू पर लपका। फिर देखते देखते वह उस डाकू को निगल गया। कोई भी न बच सका।

वज्रमुष्टि भी ठहाका मारकर हँसा। फिर वह दाँत कटकटता हुआ बड़े जोर से चिलाया—“देखना, एक दिन समुद्रकेतु भी इसी तरह की मौत मरेगा। और फिर मरेगा तो मेरे हाथ ही मरेगा नहीं तो मगर है ही। जय कालिकेय।”

इतने में, वज्रमुष्टि के साथ आये हुए दो सिपाही, झील के किनारे आकर वज्रमुष्टि

इससे पहिले कि वे डाकू यह जान पाते कि किस तरह की आफ़त उन पर आ रही थी, वज्रमुष्टि की पैनी तलवार ने उनके सिर घड़ से अलग कर दिये। जब चार-गाँच होश सम्भालकर हथियारों की ओर चिल्लाते हुए भागने दिखाई दिये तो वज्रमुष्टि ने उनका भी पीछा किया और उनके हथियार छीनकर उनका काम तमाम भी जल्दी से कर दिया।

उनमें से केवल एक डाकू ही जान बचाकर झील की ओर भाग सका। पर वज्रमुष्टि उसे योही छोड़ना नहीं चाहता



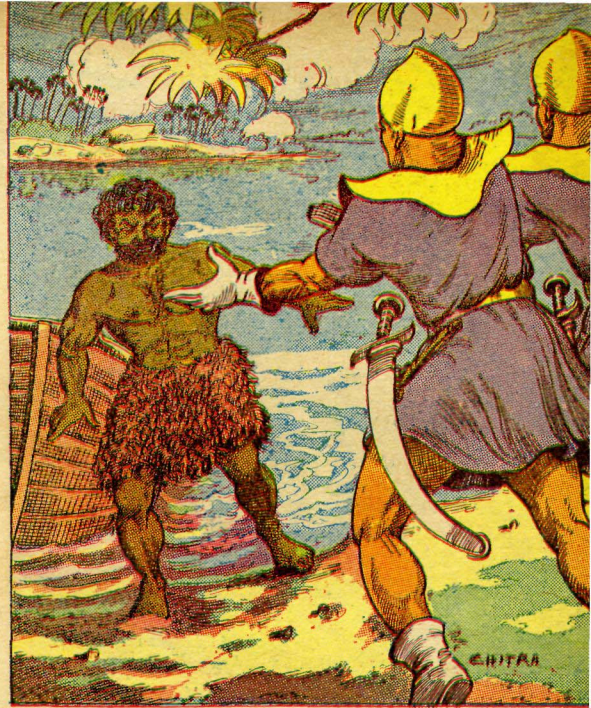
को हाथ उठाकर इशारा करने लगे वज्रमुष्टि ने चारों तरफ बड़े ध्यान से देखा और फिर सोचा कि वहाँ अधिक देर रहना अच्छा न था। वह एक तमेड़ पर चढ़कर उनके पास पहुँच गया।

उन दोनों ने उसको अकेले इतने सारे शत्रुओं को मारते देखा था। वे उसकी बहादुरी की तारीफ़ करने लगे। फिर सब मिलकर शिवदत्त के पास गये।

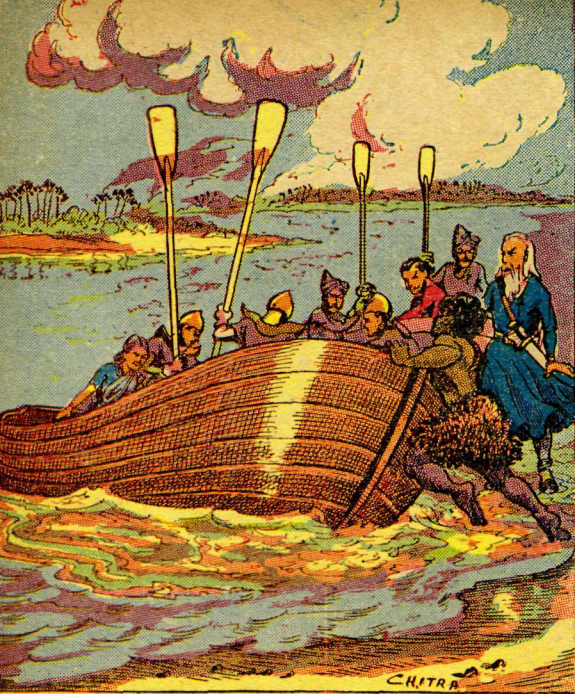
थोड़ी दूरी पर वज्रमुष्टि को देखकर शिवदत्त ने बड़ी उत्कण्ठा से पूछा—“क्या किया है? समुद्रकेतु और उसके आदमी कहाँ छिपे हुए हैं? कहीं उस तरफ़ तो नहीं हैं?”

वज्रमुष्टि, जो कुछ गुज़रा था, कहने के लिए शर्मा ही रहा था कि उसके साथ गये हुए व्यक्तियों ने शिवदत्त को उसकी बहादुरी के कारनामों के बारे में सुनाया। शिवदत्त और मन्दरदेव उसकी बड़ी देर तक प्रशंसा करते रहे।

“वज्रमुष्टि! सचमुच तुम्हारा साहस प्रशंसनीय है। अगर कभी समुद्रकेतु को मारने का मौक़ा मिला तो तुम्हारी इच्छानुसार वह काम तुम्हीं को सौंपा जायेगा।”—शिवदत्त ने वज्रमुष्टि से कहा।



देवमाया समुद्रकेतु का नाम सुनते ही खौलने लगी—“हुज़ूर! जो वज्रमुष्टि के तलवार के शिकार हुए हैं, वे ज़रूर वे ही होंगे, जिनको उसने इस इलाक़े में पहरें पर रखा था। इसलिए अब हम बिना किसी की नज़र में आये, उसके निवास स्थान पर पहुँच सकते हैं। यहाँ से करीब चार-पाँच मील के फ़ासले पर ही उसकी जगह है। वहाँ पहुँचने के लिए या तो हमें नावों पर जाना होगा, नहीं तो तमेड़ों पर।” “समुद्रकेतु जिस जगह रहता है, वह कोई क़िले की तरह तो



कुछ नहीं है ? हमारे लिए कोई खतरा तो नहीं है ?"—शिवदत्त ने पूछा ।

देवमाया ने कहा—“वहाँ क्रिले की दीवारें नहीं हैं । वह सारी जगह समुद्र के जल से भरी हुई है । कहीं कहीं टापू की तरह भूमि ऊपर निकली हुई है । उन्हीं टापुओं में से एक पर वह रहता है । उसकी मोर्चाबन्दी, उसके चारों ओर की समुद्र के जल की खाई ही है । इसके अलावा वहाँ कुछ नहीं है ।”

“उसके पास अपनी रक्षा के लिए कई नौकर-चाकर, सिपाही वगैरह उस टापू में नहीं हैं ?”—शिवदत्त ने कहा ।



“उनका क्या कहना ? बहुत-सारे हैं । पर उनसे भी अधिक संख्या गुलाम और शत्रुओं की है । मैं भी वहाँ कई दिनों तक गुलाम रह चुकी हूँ । कई तकलीफों का सामना कर चुकी हूँ । अगर हमने एक बार उन गुलामों को रिहा कर दिया तो वे अकेले ही बिना हमारी मदद के समुद्रकेतु और उसके सिपाहियों का काम तमाम कर देंगे ।”—देवमाया ने बड़े जोश से कहा ।

“गुलाम कितने होंगे ?”—शिवदत्त ने पूछा ।

“दस सौ, या बारह सौ ; इससे किसी भी हालत में कम नहीं ।”—देवमाया ने बताया ।

“अगर यह बात है तो चलो ; अभी समुद्रकेतु के निवास स्थान पर चलें । वज्रमुष्टि की तमेड़ पर हम सब उथले झील में से होते हुए समुद्रकेतु की जगह पहुँच सकते हैं । अन्धेरा हो रहा है । शत्रुओं का मुक्काबला कर उनको मारने का यह ही सबसे अच्छा समय है ।”—शिवदत्त ने गम्भीरता से कहा ।

सब खारे पानी के झील की ओर चले । थोड़ी देर बाद वे ऐसी जगह पहुँचे, जहाँ





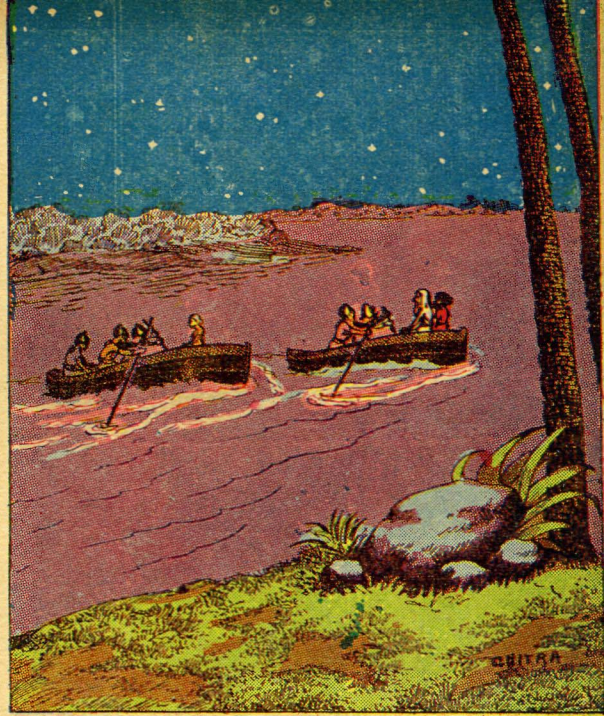
चारों ओर पानी था और बीचों बीच छोटे छोटे टापू थे। समुद्री डाकुओं की छोटी छोटी किश्तियाँ वहाँ पेड़ों से बँधी हुई थीं।

सब उन पर चढ़कर, देवमाया के बताये हुए रास्ते पर चलने लगे। तब तक काफ़ी अन्धेरा हो चुका था। बादलों की आड़ में से चन्द्रमा झाँक-सा रहा था। कहीं दूर, समुद्रकेतु के निवास स्थल पर, मशालों की रोशनी के सिवाय चारों ओर अन्धेरा था।

उस अन्धेरे में, एक दूसरे को सावधान करते हुए किश्तियों को एक से एक सटाकर, होशियारी से बच बचकर, शिवदत्त और उसके साथी आगे बढ़ रहे थे।

रास्ते में, इधर उधर टापुओं में, वृक्षों से, जल पक्षियों की अजीब आवाज़ सुनाई देती; जल में भोजन के लिए इधर उधर घूमते मगर पास आते और किश्तियों और तमेड़ों पर आदमियों को पा, यकायक दूर भाग जाते। मछलियाँ भी रह रह कर उछल-कूद कर रही थीं।

क़रीब आधी रात में, शिवदत्त, अपने साथियों के साथ समुद्रकेतु के निवास स्थान के पास पहुँचा। अब चुपचाप, काली कोठरियों में बन्द गुलामों को रिहा करना



था और उनकी मदद से समुद्रकेतु का खात्मा करना था।

शिवदत्त यह सोच ही रहा था कि वह समुद्रकेतु के निवास स्थान के और पास पहुँच गया। चुपचाप, वे किश्तियों में से किनारे पर उतरे। वे धीरे धीरे, लुकते-छुपते आगे बढ़े। थोड़ी दूर जाने के बाद, वे ऐसी जगह पहुँचे, जहाँ हाज़ारों मशालों के जलने के कारण रात भी दिन की तरह मालूम होती थी।

शिवदत्त ने, पेड़ों के झुरमुट में छुपकर अपने साथियों को, इशारा करके पास





गुलामों में से एक हट्टे-कट्टे आदमी को बहुत-सा धन देखर खरीद कर ले जायेंगे और मगर को बलि दे देंगे।”

शिवदत्त को उसकी बात सुनकर आश्चर्य हुआ। “मकर देवता को खिलाने के लिए सिवाय आदमियों के, जन्तु-जानवर काम नहीं आते हैं क्या? उसके लिए आदमी ही क्यों चाहिए? भले ही वह देवता हो, पर है तो वह मगर ही!” शिवदत्त ने पूछा।

“मकर मण्डल के लोग उसे देवता ही मानते हैं। चाहे वह छोटा-मोटा देवता ही क्यों न हो, उससे वे बहुत डरते हैं। उसके लिए जानवर बलि देना वे अच्छा नहीं समझते।”—देवमाया ने आदर पूर्वक कहा।

बुलाया। सब पेड़-पत्तों की आड़ में से, मशालों की ओर देखने लगे। वहाँ चालीस-पचास आदमी थे, कुछ बैठे हुए, कुछ खड़े हुए थे। समुद्रकेतु हाथ में शराब का प्याला लेकर, रह रहकर, कवच पहिने हुए चार-पाँच आदमियों से कुछ बात कर रहा था।

“अगर यह सच भी है तो हमारे साथ भी तो यम आ रहे हैं।” कहते कहते शिवदत्त, वज्रमुष्टि की तरफ हाथ दिखाते हुए हँसने लगा।

देवमाया ने अँगुली से उन्हें दिखाते हुए कहा—“वे चारों मकरमण्डल के राजा हरिशिख के सैनिक हैं। सत्रे मकर देवता के प्रातःराश के लिए वे यहाँ आये हैं। वे समुद्रकेतु के बाँधकर लाये हुए

“मैं उस मकर देवता के लिए ही नहीं, इस समुद्रकेतु के लिए भी यम हूँ। वह दिन दूर नहीं है। देखते रहिएगा” वज्रमुष्टि ने दाँत कट कटाते हुए कहा।





“अच्छा! अब भला इसी में है कि हम वहाँ बँधे हुए उन गुलाम कैदियों को छुड़वावें। अगर हम उस काम में कामयाब न हुए तो वापिस भाग जाने के लिए किश्तियाँ-तमेड़ तो हैं ही।”— शिवदत्त ने कहा।

देवमाया उन्हें उस जगह ले गयी, जहाँ गुलाम बन्द किये गये थे। सब, पेड़ों की आड़ में से दबे पैर उस तरफ़ चले। थोड़ी देर बाद वे एक ऐसी जगह पर आये जहाँ शायद पशु बाँधे जाते होंगे। पर वहाँ उन्हें कतार में, जंजीरों से हाथ-पैर बन्धे हुए गुलाम दिखायी दिये। उनके आश्चर्य की सीमा न रही।

शिवदत्त अपने अनुचरों को संकेत कर, अन्दर घुसा। वज्रमुष्टि ने हर गुलाम को धीरे धीरे बताया कि वे किस काम पर आये थे। उसने उन्हें चुपचाप रहने की हिदायत की और जल्दी ही छूट जाने की आशा भी दिलायी।

अपने हथियारों से शिवदत्त और उसके साथियों ने कुछ गुलामों की जंजीरें काट दीं। फिर गुलामों ने दूसरे गुलामों की जंजीरें तोड़ दीं। इस तरह देखते देखते



थोड़े समय में ही अन्दर आसपास की कोठरियों में बन्धे गुलाम रिहा कर दिये गये और सब एक जगह इकट्ठे हो गये।

स्वयंप्रभा कहाँ है? यह प्रश्न, शुरु से देवमाया और मन्दरदेव को बाँध रहा था। उन्होंने कई गुलामों से उसके बारे में पूछा। उनमें से कोई भी उसके बारे में न जानता था। स्वयंप्रभा को मकर देवता को खिन्ना तो नहीं दिया गया है? वे डर रहे थे।

इतने में एक गुलाम ने आगे बढ़कर कहा—“हुजूर! कुछ देर पहिले ही





पहरेवाले आपस में बातचीत कर रहे थे कि कोई खुबसूरत कन्या पकड़ी गयी है और समुद्रकेतु उसको बड़े दाम पर किसी को बेचने जा रहा है।”

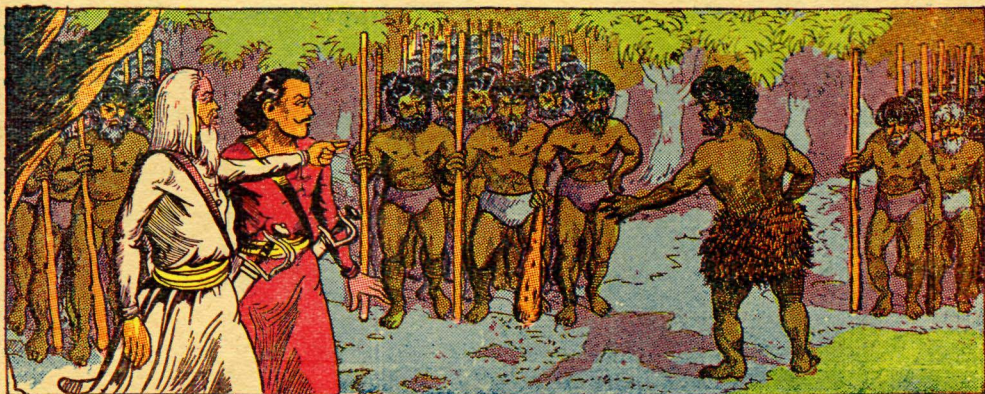
यह सुन, देवमाया और सब भी आग बबूला हो गये। मन्दरदेव ने शिवदत्त के पास जाकर पूछा—“शिवदत्त! यहाँ इतने गुलाम हैं। पर उनका पहरा देनेवाला कोई भी नहीं है। बड़े अचरज की बात है।”

शिवदत्त ने मुस्कराकर कहा—“इस समुद्र के टापू पर से हाथ-पैर बन्धे गुलाम कहाँ जा सकते हैं? इसलिए तो इन्हें यों यहाँ छोड़ दिया गया है। खैर, अब हमें यह सोचना चाहिये कि क्या करना है? स्वयंप्रभा भी इसी इलाके में कहीं न कहीं होगी! हम सब मिल कर समुद्रकेतु पर हमला करें और उसके साथियों को

नरक पहुँचा दें। यही फ़िलहाल हमारा कर्तव्य मालूम होता है।”

इस बीच में वज्रमुष्टि ने गुलामों को एक जगह इकट्ठा करके उनको लाठियाँ और सीखचे दिये। जिसको जो मिला, वह उसी को लेकर तैयार हो गया। शिवदत्त की आज्ञा पर उन सब की तीन टोलियाँ बनाई गयीं। शिवदत्त, मन्दरदेव, और वज्रमुष्टि उन तीन टोलियों के मुखिये बन कर हमला करेंगे, यह तय हुआ।

सब, पेड़ों की आड़ में, अन्धेरे अन्धेरे में चुपचाप चलते चलते तीन तरफ़ से समुद्रकेतु पर यकायक भयंकर शब्द करते हुए कूदे। इस तरह अचानक उन पर हमला करनेवाले कौन थे, वे यह जान न पाये। इतने में कई डाकू शिवदत्त और उसके सिपाहियों के तलवारों के शिकार हुए। (अभी और है)





यशोधर - नगर

मिथिला नगर में यशोधर नाम का एक क्षत्रिय नवयुवक रहा करता था। वह बड़ा पराक्रमी और साहसी था। वह बड़ा दुष्ट भी था। कोई ऐसा पाप न था, जो उसने न किया हो। अगर उसको कोई रोकता तो उसे वह अपनी तलवार के घाट उतार देता। प्रायः लोग सीधे-सादे होते हैं। दुष्टों से दूर रहने में ही अपना भला समझते हैं।

परन्तु आखिर उसके भी बुरे दिन आये। एक दिन वह राजा के साले से ही भिड़ गया। दोनों ने तलवार निकाली पर राजा का साला अभी तलवार चला ही पाया था कि यशोधर ने उसके कलेजे में तलवार भोंक दी। यह खबर सुनते ही राजा ने अपने सिपाहियों को हुकुम दिया कि वे यशोधर का सिर काट दें। अगर यशोधर जीना चाहता था तो

उसके सामने एक ही रास्ता था कि देश छोड़कर कहीं चला जाये। इसलिए वह अपने घोड़े पर सवार होकर भागने लगा। घोड़ा तीर की तरह कोसों भागता रहा। एक दिन रात को भागते भागते वह बहुत थक गया।

कहीं ऐसा न हो कि वह देश से बाहर न जा पाया हो और राज-कर्मचारी उसका पीछा कर रहे हों, वह भयभीत भूखा-त्यासा अंधेरे में घने जंगलों को पार करता चला गया। सवेरे होते होते वह एक पहाड़ की चोटी पर पहुँचा।

वहाँ उसने थोड़ी देर आराम किया। फिर नज़र फेर कर उसने पीछे रास्ते की ओर देखा। उसे मादूम हो गया कि कोई भी उसका पीछा न कर रहा था। फिर उसने सामने की ओर पहाड़ के परली तरफ देखा।

वहाँ उसे एक घाटी में एक सुन्दर नगर दिखाई दिया।

उस नगर को देखते ही यशोवर्धन की जान में जान आई। क्योंकि उसने कभी न सुना था कि उसके देश में भी उतना सुन्दर शहर था। वह ज़रूर कोई दूसरा राज्य होगा। वहाँ वह आराम और चैन से रह सकेगा यह सोच वह घाटी की ओर उतरने लगा। रास्ते में उसे एक गड़रिया दिखाई दिया। उसने उससे पूछा—“वह जो नगर दिखाई दे रहा है, उसका नाम क्या है?”

“वह धर्मनगर है”—गड़रिये ने बताया।

यशोवर्धन का अनुमान ठीक निकला। उसने उस नगर का नाम कभी न सुना था। वह नगर नया ही न था, बड़ा अजीब भी लगता था। यशोवर्धन नगर में घुसकर चौड़ी चड़क पर बड़े बड़े मकानों की गलियों के बीच में चलने लगा। सड़क पर कितने ही स्त्री-पुरुष चल रहे थे। कई खड़े होकर बातें कर रहे थे। उनमें से कोई भी बीमार या कमज़ोर नहीं दिखाई दिया।

“यह तो कोई पुण्य नगर-सा मालूम होता है। यहाँ कहीं भी दुख नहीं दिखाई

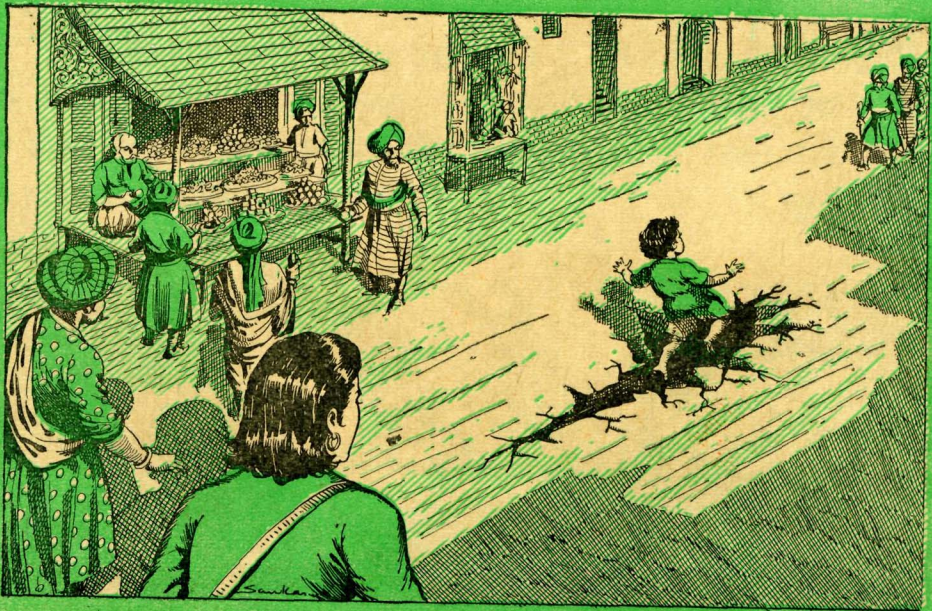


देता।” सोचते सोचते यशोवर्धन एक दूकान के पास गया। उस समय उसे एक विचित्र घटना दिखाई दी। दूकानदार जब किसी ग्राहक से बातें कर रहा था तो कोई नौजवान दूकान में से कीई चीज़ चुराकर इधर उधर देख, रफू चकर हो गया। वह अभी दो चार गज़ ही गया था कि भयंकर शब्द के साथ भूमि में दरार फटी और वह उसमें गिर गया। फिर दरार भर गई, भूमि समान हो गई।

यशोवर्धन चकित हो बहुत देर तक यह देखता रहा। उसे पता लगा कि जो घटना

वह देख रहा था और लोग भी देख रहे थे; पर वे उसकी तरह चकित न थे। वे एक मिनट रुके, फिर चलते गये जैसे कि वह कोई रोज़ की घटना हो।

यशोवर्धन जल्दी ही जान गया कि उस नगर में लोगों की मौत उस प्रकार ही होती थी। उसने कितनी ही जगह कितनों को भूगर्भ में समाते देखा। यही नहीं, उनमें से एक भी किसी दुर्घटना के कारण नहीं मरा था। उन्हीं लोगों के पाँवों के नीचे ज़मीन फट गई थी, जो दूसरों को हानि पहुँचना चाहते थे। एक आदमी



आगे जा रहा था। किसी ने उसको पीछे से छुरी से भोंकना चाहा, पर इतने में भूमि फटी, और वह उसमें जीते जी समा गया। एक और जगह चार-पाँच आदमी एक स्त्री को पकड़ना चाहते थे कि उनके नीचे की भूमि भी फटी। वे आदमी उसमें जा गिरे और भूमि फिर पहिले जैसी हो गई।

इन घटनाओं को देखकर यशोवर्धन सोचने लगा—“यह जानते हुए भी कि भूदेवी उन्हें क्षमा नहीं करेगी, यहाँ लोग क्यों पाप करते हैं? इस तरह मरने के बदले, ये लोग अच्छा काम करके क्यों नहीं ज़िन्दगी बसर करते?”

“तुम कहाँ के रहनेवाले हो?” किसी ने उसके पास आकर पूछा। यशोवर्धन ने चौंककर पीछे मुड़कर देखा। वहाँ एक स्वामी खड़े हुए थे।

“मैं मिथिला नगर का हूँ।” यशोवर्धन ने कहा।

“क्या तुम्हारी मिथिला में मृत्यु कह कर नहीं आती है? क्या वहाँ लोग अचानक नहीं मर जाते हैं? क्या इस कारण वे पश्चात्ताप कर, पाप करना छोड़ देते हैं?” स्वामी ने पूछा।

यशोवर्धन की आँखें खुलीं और उसे अपने सारे पाप याद आये। उसे पश्चात्ताप होने लगा। उसने स्वामी के पैरों पर पड़कर कहा “स्वामी! मैं भी एक पापी हूँ। मौत के डर से यहाँ भाग कर आया हूँ और यहाँ आकर मुझे मालूम हुआ कि भागना मौत से नहीं चाहिये, बल्कि पाप से भागना चाहिये। मुझे पुण्य का रास्ता दिखाइये।”

स्वामी उसको अपने साथ ले गये और उन्होंने उसको धर्म और नीति का उपदेश देकर नीति का मार्ग दिखाया।



एक रूसी लोककथा—

आँखों के तारे !

पुनवट की बात है। चार स्त्रियाँ पानी भरते भरते अपने अपने पुत्रों का गुणगान कर रही थीं। पहली स्त्री बोली—“बहिन, मेरा लड़का कोकिल की भाँति कूकता है। उसका बड़ा सुरीला कंठ है।”

दूसरी ने कहा—“मेरे पुत्र को ताकत में कोई नहीं हरा सकता !”

तीसरी बोली—“मेरा लड़का दौड़ में बेजोड़ है।”

चौथी स्त्री चुप रही। तीनों स्त्रियों ने उससे पूछा—“और तुम्हारा पुत्र कैसा है बहन ?”

चौथी स्त्री बोली—“मेरा लड़का सीधा सादा है। उसमें कोई विशेषता नहीं !”

चारों स्त्रियाँ घड़ों को अपने सिर पर रखकर चल पड़ीं। एक वृद्ध उनकी बातें सुनता हुआ उन के पीछे हो लिया। इतने में सामने से पहली स्त्री का पुत्र आता दिखाई दिया। वह सचमुच कोयल के समान पंचम स्वर में कूक रहा था। उसकी माँ ने उसकी ओर गर्व से देखा और कहा—“देखा मेरे लाल को ?”

तभी दूसरी स्त्री का पुत्र आता दिखाई दिया। वह मतवाले हाथी की भाँति झूमता झूमता चला आ रहा था। दूसरी स्त्री ने अभिमान से कहा—“यही मेरा पुत्र है !”

इस बीच तीसरी स्त्री का पुत्र भी आगया। वह हिरन की भाँति चौकड़ियाँ भरता हुआ आ रहा था। तीसरी स्त्री ने प्रसन्नता से कहा—“यही है मेरी आँखों का तारा।” इसके बाद चौथी स्त्री का पुत्र आया। उसमें कोई विशेषता नहीं थी। बड़ा सीधा-सादा था।

उसने आते ही घड़े के भार से दबी माँ के सिर से घड़ा उतार कर अपने सिर पर रख लिया और चल पड़ा। स्त्रियों ने पीछे आते वृद्ध से पूछा—“बाबा ! तुमने हमारे पुत्रों को देखा ?” वृद्ध ने उत्तर दिया—“मैं तो केवल एक ही को देख रहा हूँ।”

—श्री सत्यस्वरूप दत्त, मेरठ.

धनंजय



विक्रमार्क फिर पेड़ के पास जाकर, शव उतारकर, कंधे पर डाल श्मशान की ओर चला। शव में स्थित बेताल ने कहा—
“राजा ! तुम्हें देखकर मुझे बड़ी खुशी होती है। क्योंकि तुम्हारी और धनंजय की तरह कम लोग ही वचन निभा पाते हैं। उस धनंजय की कहानी सुनाता हूँ, सुनो।”
उसने यों कहानी सुनानी शुरू की :

किसी ज़माने में भद्रावती नगर में धनंजय नाम का एक बड़ा अमीर रहा करता था। जब कि और धनी खूब धन कमाकर मशहूर हुए तो धनंजय दान देने के कारण दानकर्ण के रूप में प्रसिद्ध हुआ। उसका सारा जीवन दान-धर्म में ही गुज़र गया। वह अस्सी वर्ष का हो गया। उस अस्सी वर्ष की

बेताल कथाएँ

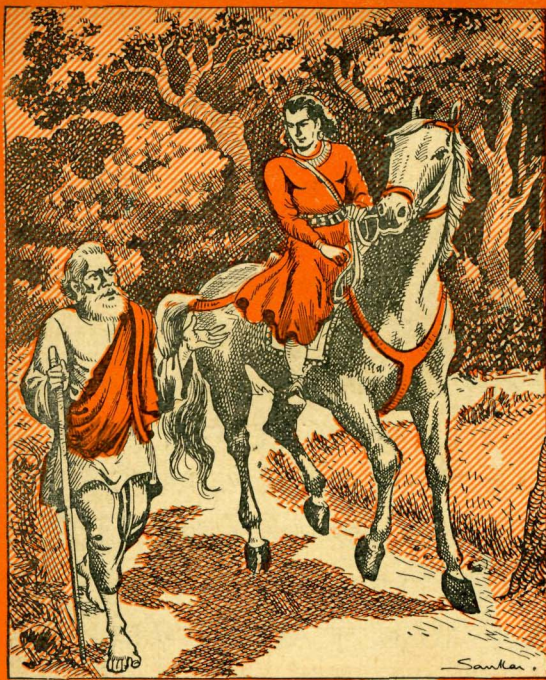
उम्र तक उसने किसी याचक को खाली हाथ अपने घर से न भेजा था।

भद्रावती से कई कोस दूर एक कस्बा था। उसमें धीरवर्मा नाम का एक नवयुवक रहा करता था। वह भी बड़ा धनी था। जब उसको धनंजय की कीर्ति के बारे में मालूम हुआ तो वह उससे ईर्ष्या करने लगा। “यह धनंजय मुझ से अधिक धनी नहीं है। तो भी अगर वे दानकर्ण कहलाये जा सकते हैं, तो मैं क्यों न कहलाऊँ?” यह सोच वह भी दान देने लगा। थोड़े दिनों में,

धीरवर्मा की भी धनंजय की तरह लोग प्रशंसा करने लगे।

एक बार जब धीरवर्मा अपने घर के सामने आँगन में बैठा हुआ था तो एक बुढ़िया ने आकर भीख माँगी। धीरवर्मा ने उसके हाथ में कुछ पैसा रख दिया। वह जाने को तो चली गई। पर फिर एक और दरवाज़े में से आकर उसने हाथ पसारा। यह जानकर भी धीरवर्मा ने फिर उसे दान दिया। पर तब भी वह बुढ़िया न गई, वह तीसरे दरवाज़े में से आई। धीरवर्मा ने उसको बारह बार दान दिया। जब वह





तेरहवीं बार आई तो उसने कहा—
“बुढ़िया ! बारह बार भीख लेकर अब तुम
तेरहवीं बार माँग रही हो । मैं नहीं समझ
पा रहा हूँ कि तुम क्या चाहती हो ?”

बुढ़िया का शर्मिन्दा होना तो अलग
वह गुस्से में चिल्लाई—“तुम भी कोई
दानी हो ? धनंजय के घर में ३२ दरवाज़े
हैं । हर दरवाज़े में से जाकर मैंने उनसे
दान लिया है । तब भी उन्होंने मुझे नहीं
पहिचाना । तुमने मुझे दूसरी बार ही पहिचान
लिया । कहाँ धनंजय और कहाँ तुम ?”
बुढ़िया कोसती-कुढ़ती चली गई ।



बुढ़िया की बातें धीरवर्मा को छुरी की तरह
चुर्भी । “इतने दान-धर्म के बावजूद भी मैं
धनंजय से कम समझा जाता हूँ । जब तक वह
बूढ़ा ज़िन्दा है तब तक मेरी कीर्ति नहीं बढ़
सकती । मैं ही जाकर उसका काम तमाम
कर दूँगा ।” यह सोच धीरवर्मा, बिना किसी
से कहे, घोड़े पर सवार हो निकल पड़ा ।

वह दो दिन सफ़र करने के बाद,
धनंजय के शहर के समीप पहुँचा । जब जंगल
पार कर वह शहर में घुस ही रहा था कि
उसे धनंजय दिखाई दिया । वह रोज़ जंगल
तक टहलने जाया करता था । क्योंकि वह
अकेला था और उसने मामूली कपड़े पहिन
रखे थे ; इसलिए धीरवर्मा सन्देह भी न कर
सका कि वह धनंजय हो सकता है ।
धीरवर्मा ने धनंजय के बारे में सुन ही रखा
था ; पर उसे कभी देखा न था । इसलिए
वह उसको पहिचान न सका ।

“क्या आप बता सकेंगे कि धनंजय के
घर कौन-सा रास्ता जाता है ?”—धीरवर्मा
ने धनंजय से पूछा ।

“हाँ, हाँ ! ज़रूर बता सकता हूँ । मेरे
अलावा धनंजय को और कौन अच्छा
जानता है ?”—धनंजय ने कहा ।



“ऐसी बात है तो आप हमें उनके घर ले चलिये।”—धीरवर्मा ने कहा।

“क्या आप उनसे मिलना चाहते हैं?”—धनंजय ने पूछा।

“एक बार देख लूँ तो काफ़ी है। फिर देखने की कोई ज़रूरत नहीं।”—धीरवर्मा ने कहा।

धनंजय ताड़ गया कि दाल में कुछ काला है। “इस समय धनंजय शहर में नहीं हैं। परन्तु जब तक वे वापिस नहीं आते हैं तब तक आप उन्हीं के घर में रह सकते हैं। मैं इसका इन्तज़ाम करवा दूँगा। मैं आपको यह भी न जानने दूँगा कि आप कौन हैं।”—धनंजय ने कहा।

“बहुत कृतज्ञ हूँ। हाँ, तो आप कहाँ रहते हैं?”—धीरवर्मा ने पूछा।

“और कहाँ? मैं भी धनंजय के घर में ही रहता हूँ। छुटपन में भी हम एक दूसरे को छोड़कर रह नहीं पाते थे। अब मैं उसी की नौकरी में हूँ। वह तो इतना बड़ा हो गया और मैं उतना का उतना ही रहा।”—धनंजय ने कहा।

“आपके साथ बड़ा अन्याय हुआ।” कहता हुआ, धीरवर्मा धनंजय के साथ चल



पड़ा। दोनों धनंजय के घर पर पहुँचे। धनंजय ने धीरवर्मा को एक कमरे में बिठाया और नौकरों को उसने हिदायत कर दी कि वे अतिथि को यह न जानने दें कि वह कौन है और उससे कह दें कि वह शहर में न था।

दो दिन बीत गये। धनंजय रोज़ आकर धीरवर्मा से बातचीत भी करता रहा पर धीरवर्मा ने उसको यह न बताया कि वह क्यों आया था। परन्तु धनंजय आसानी से जान गया कि उसके आने में ज़रूर कोई चाल थी। यह इस

बात से और भी साफ़ हो जाती कि जब मैं तुम्हें सलाह भी दे सकूँगा।”—
कभी वह अपनी निन्दा आप करता तो धनंजय ने धीरवर्मा को यों उकसाया।
धीरवर्मा बड़े गौर से सुनता।

तीसरे दिन सवेरे धनंजय ने धीरवर्मा के पास जाकर कहा—“बेटा! अभी धनंजय आये हैं। क्या उन्हें देखना चाहते हो?”
धनंजय ने पूछा।

“नहीं, अगर हो सके तो उन्हें मुझे दूर से दिखाइये।”—धीरवर्मा ने कहा।
“अभी तक तुमने मुझे यह नहीं बताया कि तुम किस काम पर आये हो। चाहे वह काम कुछ भी हो, मैं करवा दूँगा।
उधर ही जा सकते हो।”



धीरवर्मा उस दिन शाम को घोड़े पर सवार होकर निकल पड़ा। जब नगर पार कर वह जंगल में घुसा तो उसे सामने एक बूढ़ा चलता दिखाई दिया। धीरवर्मा ने उसके पास जाकर कहा—“ए बूढ़े! आज तेरी आयु खतम हो गई है” उसने अपनी तलवार उठाई। बूढ़े ने पीछे मुड़कर देखा। धीरवर्मा का उठा हुआ हाथ उठा ही रह गया। “ओह! आप हैं?”—धनंजय को देखकर उसने आश्चर्य से पूछा।

“हाँ बेटा! मैं ही हूँ। कितनों ने मुझ से कितनी ही चीज़ें माँगी हैं। और मैं भी

सब को सब देता आया हूँ। सिर्फ़ तुमने ही मेरी जान माँगी है। कैसे ‘नहीं’ कह सकता हूँ? तुम उसे लेकर चले जाओ, कोई नहीं रोकेगा?”—धनंजय ने कहा।

धीरवर्मा ने आँसू बहाते हुए कहा—
“महात्मा! मुझे क्षमा कीजिये।”

“बेटा! कीर्ति की आकांक्षा कोई दोष नहीं है। कई ऐसे लोग भी हैं जो उस कीर्ति के लिए युद्ध करते हैं और लाखों आदमियों का खून बहाते हैं। और उस खून में खुद तैरते हैं। तुम्हारी कीर्ति की आकांक्षा के पीछे कोई स्वार्थ नहीं है। तुम



यही चाहते हो कि अपना सर्वस्व देकर कीर्ति पा सको। तुम बहुत अच्छे हो। मैं बहुत दिन जीता भी नहीं रहूँगा। व्यर्थ मैं तुम्हारी कीर्ति में अडचन बना हुआ हूँ। मुझे मारकर अपना काम पूरा कर लो।”

“नहीं स्वामी! आप जब तक मुझे दण्ड नहीं देंगे, तब तक आपके पैर छोड़कर मैं नहीं जाऊँगा”—कहते हुए धीरवर्मा धनंजय के पैरों पर गिर पड़ा।

“अगर तुम्हें इतना दुख हो रहा है तो तुम्हें मैं प्रायश्चित्त का एक उपाय बताता हूँ। तुम मेरा नाम रखकर मेरे घर में अपनी ज़िन्दगी बिताओ। मैं जाकर तुम्हारे घर में रहूँगा।”—धनंजय ने कहा। धीरवर्मा ने उसका सुझाव मान लिया।

वेताल ने कहानी सुनाकर पूछा—
“धीरवर्मा का धनंजय को न मारने का वस्तुतः क्या कारण था? इतनी कीर्ति पाने

के बाद उसने अपना नाम धीरवर्मा को क्यों दिया? अगर जान-बूझकर तुमने ठीक उत्तर न दिया तो तुम्हारा सिर फूट जायेगा।”

“धनंजय एक ऐसा दान दे रहा था, जो जीते जी धीरवर्मा कभी न दे सकता था, प्राण-दान। अगर वह यह दान ले लेता, तो कभी भी वह धनंजय की बराबरी न कर पाता। इसी कारण उसने दण्ड माँगा। धनंजय ने अपना प्रसिद्ध नाम धीरवर्मा को इसलिए दिया था क्योंकि उसकी ज़िन्दगी अब थोड़ी ही बाकी रह गई थी। धीरवर्मा नौजवान था। इस उद्देश्य से कि जब तक वह जीवित रहेगा, अपना नाम भी प्रसिद्ध रहेगा इसलिए उसको उसने अपना नाम दिया था।”—विक्रमार्क ने कहा।

राजा के इस प्रकार मौन-भंग होते ही वेताल शव के साथ अन्तर्धान हो गया।
(कल्पित)





बीरू की बहिन

लकड़पुर नामक गाँव में बीरू नाम का एक माली रहा करता था। बीरू शाक-सब्जी उगाने में बहुत ही चतुर था। वह अपनी थोड़ी सी ज़मीन में, खूब खाद डालता, क्या रियाँ बनाता, खूब शाक-सब्जी पैदा करता और उनको अच्छे दाम पर बेचता। उसी आय पर वह आराम से ज़िन्दगी बसर कर रहा था। उसको अपने बाग़ की शाक-सब्जी पर इतना प्यार था कि बड़े कद्दुओं के उसने प्यार से नाम भी रख रखे थे।

उसी गाँव में भरता नाम का एक और माली था। उसकी ज़मीन, बीरू की ज़मीन से अधिक उपजाऊँ थी और बड़ी भी थी। परन्तु वह हमेशा पैसे कमाने के ही फेर में रहता। शाक-सब्जी अच्छी तरह पैदा न करता। उनमें खास दिलचस्पी भी न

दिखाता। बीरू की सब्जियों को जो दाम मिलता वह उसे नहीं मिलता।

“तू ज़रा पढ़ा-लिखा भी है। वह बीरू तो कतई काला अक्षर भैंस बराबर है। पर क्या फ़ायदा? तू उसकी तरह सब्जियाँ भी पैदा नहीं कर सकता।” भरता को सब लोग चिढ़ाया करते।

एक साल, बीरू के बाग़ में बड़े बड़े कद्दू लगे। उतने बड़े कद्दू, किसी ने उससे पहिले कभी भी कहीं न देखे थे। बीरू की खुशी की हद न थी। उसने बड़े प्रेम से अपने कद्दूओं को नाम दिया, किसी को “ऐरावत” कहा तो किसी को “गुड़ का घड़ा”, “महालक्ष्मी”, “बड़ी बहिन” “सोना” आदि। उस साल इस तरह के बड़े बड़े कद्दू चालीस हुए। कल पेंठ थी कि शाम को बीरू अपने

बाग में गया और जिन जिन कद्दुओं को पेंठ में ले जाना था, उन सब पर निशान लगा आया और सवेरे गाड़ी लेकर उनको ले जाने की सोची। उस दिन रात को बीरू को नींद न आई। उसको उन कद्दुओं में बाज़ार में बेचने के लिये ले जाते देख, ऐसा लगा, जैसे लाड़-प्यार से पाली हुई अपनी लड़कियों को ससुराल भेज रहा हो।

अगले दिन सवेरे, गाड़ी जोतकर बीरू बाग में गया। जब कद्दू की क्यारी में गया तो उसका कलेजा थम-सा गया। कद्दुओं को कोई तोड़ ले गया था। बीरू

पागल-सा हो गया। वह काफ़ी देर तक बाग में इधर उधर चहलकदमी करता रहा। उसने ज़ोर से खूब मन ही मन गालियाँ सुनाई, अपने भाग्य को भी कोसा।

उसे यकायक खयाल आया, एक-दो कद्दू की तो बात है नहीं, पूरे चालीस कद्दू हैं! कहाँ जायेंगे? कोई ले गया होगा तो पेंठ में ही ले गया होगा। वह उन्हें कहाँ भी पहिचान सकता था।

तुरन्त वह गाड़ी लेकर पेंठ में गया। वह वहाँ पहुँच कर शाक-सब्जी की दूकानों को गौर से देखने लगा। उन दूकानों में उसको



उसके सारे कद्दू एक ढेर में दिखाई दिये ।
फौरन दुकानदार के पास जाकर बीरू ने पूछा
—“यह क्या काम है ? चोरी करते हो ? मेरे
कद्दू चुराकर अपनी दुकान में बेचते हो ?”

दुकानदार हैरान था । उसने कहा—
“इन्हें तुम्हारे गाँव का भरता ही मुझे
बेचकर दस रुपये ले गया है ।”

“भरता कहीं गया नहीं है । वह
यहीं किसी दुकान में है ।”—पासवाले
दुकानदारों ने बताया ।

बीरू ने पेंठ में उपस्थित अधिकारी के
पास जाकर शिकायत की कि भरता ने

उसके कद्दू चुराकर यहाँ बेच दिये हैं ।
भरता को दो-चार आदमी पकड़कर दुकान
के पास लाये । अधिकारी वहाँ गया ।

“यह तुम्हें कैसे मालूम कि ये कद्दू
तुम्हारे हैं ?”—अधिकारी ने पूछा ।

“मैं कैसे नहीं जानूँगा ? मैंने ही तो
बोकर, इन्हें बड़ा किया है । यह रही
“महालक्ष्मी” और यह है “ऐरावत”
कहते हुए उसने एक एक कद्दू को उनका
नाम लेकर दिखाया ।

वहाँ जमा हुए लोग उसकी नादानी पर
हँसे । अधिकारी ने भी हँसते हुए कहा—



“यह कोफ़ी नहीं है कि तुम ने अपने ही कद्दुओं को पहिचाना। क्या कोई ऐसी गवाही है जिससे दूसरे भी इन्हें तुम्हारे बता सके?” बिचारे बीरू को कुछ न सूझा।

अधिकारी ने भरता से पूछा—“क्यों भाई! बीरू कह रहा है कि तुमने उसके कद्दू चुराये हैं। तुम क्या कहते हो?”

“मेरे पास बही है, जिसमें मैं शाक-सब्जी के बोने-बेचने का पूरा हिसाब रखता हूँ। आप कहें तो मैं अभी लाकर उसे दिखा सकता हूँ।”—भरता ने कहा।

यह सुन बीरू ने कहा—“यह दिखाने के लिए कि यह मेरे ही कद्दू हैं, मेरे पास भी एक बही है। मैं भी लाता हूँ।” यह सुनते ही भरता ठहाका मारकर हँसा।

अधिकारी ने सिपाहियों के साथ उन्हें गाँव भेजा। थोड़ी देर में दोनों वापिस

आ गये। भरता अपनी बही ले आया और बीरू भी कोई पोटली-सी बाँध लाया।

भरता की बही में यह हिसाब लिखा था कि उसने उसी दिन चालीस कद्दू तोड़कर पेंठ में बेचे थे।

“तुम्हारा हिसाब क्या है?”—अधिकारी ने बीरू से पूछा।

बीरू ने पोटली खोलकर कद्दुओं के चालीस डंठल निकालकर कहा—“हुजूर, यह रहा मेरा हिसाब।” उसने एक एक डंठल लेकर एक एक कद्दू पर इस तरह चिपका दिया कि छोटे बच्चे भी समझ सकते थे कि वे कद्दू किसके थे। वे ठीक बैठते थे।

तुरत अधिकारी ने भरता को चालीस कद्दुओं का दाम बीरू को देने को कहा। उस दिन से उस गाँव में भरता का नाम “कद्दू-चोर” हो गया।



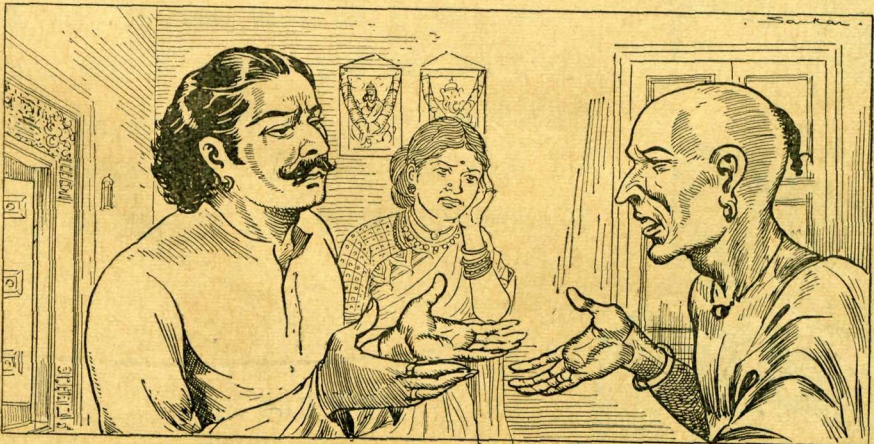
खराब मुहूर्त

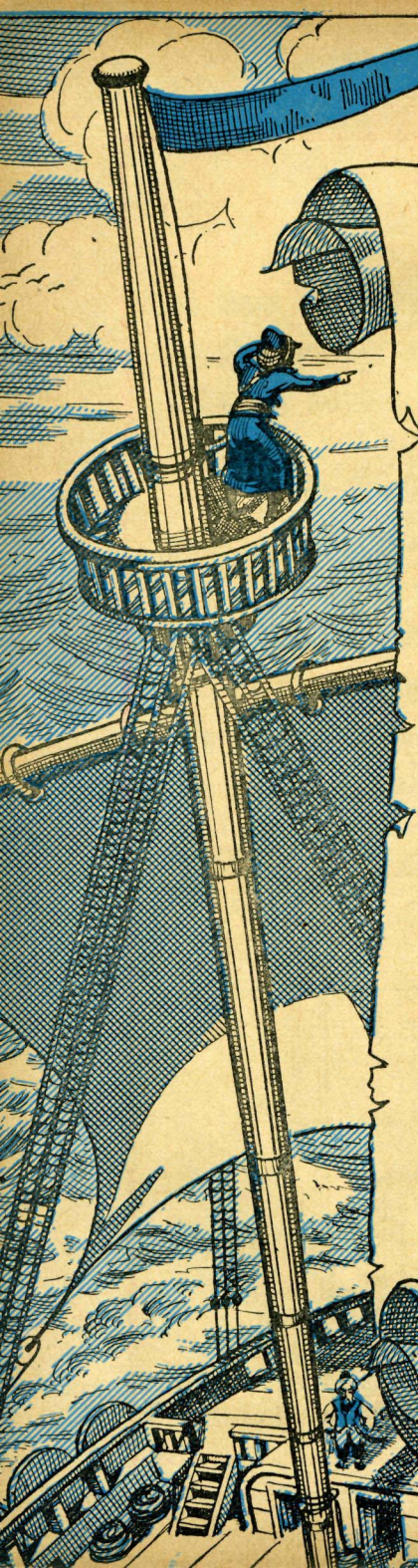
एक कस्बे में एक रईस रहा करता था। उसके एक लड़का था। उसकी उम्र विवाह के लायक हो गई थी। रईस को एक गाँव में एक सुन्दर कन्या दिखाई दी। उसने उससे विवाह की बातचीत पक्की करली। तैयारियाँ होने लगीं। घर के पुरोहित ने आकर पूछा—‘कब का मुहूर्त है?’

“कल रात। देखिये मुहूर्त तो अच्छा है?” रईस ने पूछा।

पुरोहित को गुस्सा आया। “किसने मुहूर्त निश्चित किया है? यह आपके लिये ठीक नहीं है।” उसने रईस से कहा। तुरत उसने पुरोहित से फिर मुहूर्त निश्चय करवाया, जो चार दिन बाद था। बरातियों ने अपना जाना स्थगित कर दिया। उधर लड़की वालों ने शाम तक बरातियों की प्रतीक्षा की। और जब वे न आये, तो गाँव में ही किसी लड़के को खोजकर लड़की की शादी कर दी। चार दिन बाद, जब रईस वहाँ पहुँचा तो उसे यह बात मालूम हुई।

निराश हो वह घर गया। पुरोहित को बुलवाकर उसने कहा—“क्या कर दिया तुमने?” “उस लड़की का आपके घर में न आना ही, मुहूर्त का ठीक न होना है।” पुरोहित ने कहा।





नाविक सिन्दबाद

दिन सुख से बीतते जाते थे और मैं अपनी मुसीबतों को भूलता जाता था। पर मैं धीमे धीमे ऐशो-आराम से भी ऊबने लगा। फिर नये नये अनुभव पाने की, और कारोबार करने की मर्जी होने लगी। यह सच है कि लोभ कष्टों की जड़ है। यह बात, कम से कम मेरे विषय में जल्द ही सच साबित हुई। मैं क्रीमती माल खरीदकर, बसरा पहुँचा। वहाँ एक बड़े व्यापारी का जहाज जाने को तैयार था। उसमें कई यार-दोस्त व्यापारी जा रहे थे। वे विपत्ति में मेरी मदद कर सकते थे। मैं भी उनके साथ जहाज में निकल पड़ा। अल्लाह का नाम याद करके जहाज का लंगर उठाया।

उस सफ़र में सब अच्छे शकुन ही देखने में आये। हम जिस जिस बन्दरगाह में जाते, बहुत मुनाफ़े के साथ अपना माल बेचते। हमें कई नई बातें मालूम हुईं। हम मजे में सफ़र कर रहे थे। हम मुसलमान देशों से बहुत दूर समुद्र में थे।

तीसरी समुद्र-यात्रा

CHITRA



रहे थे। साफ़ था कि वे हमसे बातें कर रहे थे। परन्तु हम उनकी भाषा नहीं जानते थे। हम निस्सहाय खड़े थे कि वे मस्तूलों पर चढ़ गये, दान्तों से रस्सियाँ काट दीं और पालों को नीचे फेंक दिया। पतवार सम्भालकर हवा के सहारे वे जहाज़ को किनारे की ओर ले गये। उन्होंने एक एक करके हमें किनारे पर उतारा। फिर वे सब जहाज़ पर चढ़ गये। समुद्र में दूर निकल गये। हमारी आँखों से ओझल हो गये।

हम द्वीप में फँस गये थे। उस रेतीले किनारे पर खड़े होकर करते भी तो क्या करते? इसलिए हम द्वीप के अन्दर गये। हमें वहाँ फलों के वृक्ष और नदियाँ दिखाई दीं। उनकी दया से हमें प्यासे और भूखे मरने की कुछ समय तक नौबत न आती। हम उन पेड़ों के फल तोड़कर खा रहे थे कि हमें दूर पर एक बड़ा मकान दिखाई दिया। वह निर्जन जान पड़ता था।

हम उसकी तरफ़ चले। वह मकान काफ़ी लम्बा-चौड़ा और ऊँचा था। उसके चारों ओर चार-दीवारी थी। चार-दीवारी की ड्योढ़ी खुली हुई थी। वहाँ दरबान बग़ैरह कोई न था। इसलिए हम सीधे

बढ़ता जाता था। सच है कि संख्या-बल के सामने वैयक्तिक शौर्य और साहस किस काम के हैं? ये बन्दर हमारे जहाज़ में घुसकर हमारा माल-असबाब देखने लगे।

मैंने बहुत-से बदसूरत जानवर देखे हैं, पर उन जैसा बदसूरत जानवर मैंने पहिले कभी न देखा था। उनके शरीर पर बड़े बड़े बाल थे। उनके मुँह काले थे। उनकी ऊँचाई शायद तीन बालिशत से अधिक न थी। उनके मुँह और उनकी आवाज़ इतनी भयंकर थी कि हम उनकी कल्पना भी नहीं कर सकते थे। वे हमें धमका

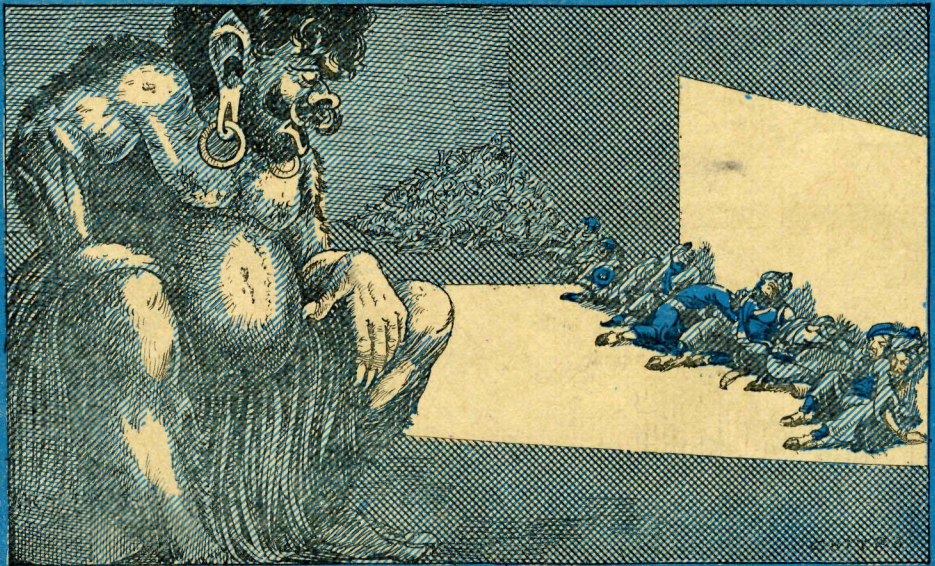


अन्दर चले गये । अन्दर एक बड़ा हॉल था । उसमें बड़े बड़े बर्तन व अन्य सामान रखे हुए थे । फर्श पर हड्डियों का ढेर पड़ा था । उनमें से कई सूख गई थीं और कई नहीं सूखी थीं । बदबू के मारे नाक फटी जाती थी । क्योंकि हम बहुत थक थका गये थे, इसलिए हम वहीं सो गये ।

सूर्यास्त के थोड़ी देर बाद बिजली-सी गरजी और हम घबराकर उठ बैठ गये । हमें कोई भूत-सा काला-कलटा ऊपर से उतरता दिखाई दिया । वह ताड़ जितना ऊँचा था । उन मर्कटों से भी कहीं अधिक

बदसूरत था । उसकी आँखें अंगीठियों की तरह जल रही थीं । उसके बगल के नोकीले दाँत जंगली सूअर के दाँतों की तरह बाहर निकले हुए थे । उसका निचला होंठ छाती पर लटक रहा था । कान कन्धों को छू रहे थे । उसके नाखून शेर के नाखूनों की तरह थे ।

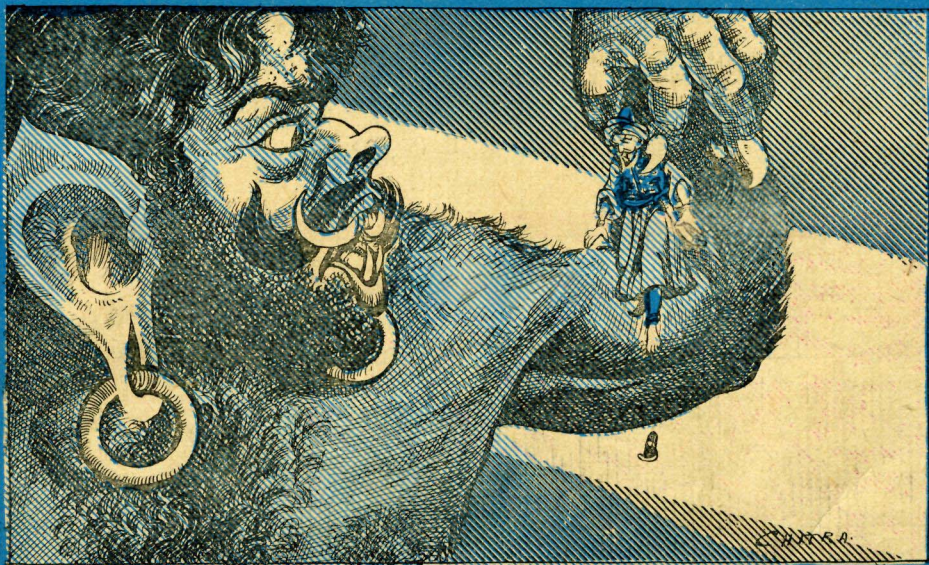
डर के कारण न हमारे हाथ हिलते थे, न पैर ही । वह दीवार के सहारे एक बेंच पर बैठ गया और हमें एक एक करके गौर से देखने लगा । फिर वह हमारे पास आया ; मेरे गले का चमड़ा पकड़कर इस तरह उठाया, जैसे मैं कोई चिड़िया हूँ ।



इधर उधर घुमाकर उसने मुझे देखा, मेरा सिर टटोल टटोलकर सहलाया। शायद मैं उसे पसन्द नहीं आया था। मैं तो यँही दुबला-पतला था, सफ़र के कारण और भी कमज़ोर हो गया था। उसने मुझे नीचे फेंक दिया। फिर मेरे साथवाले को भी उसी तरह उठाकर देखा और उसे भी नीचे फेंक दिया। तब एक और को उठाया। इस तरह सब को देखता देखता वह कप्तान के पास पहुँचा।

हमारा कप्तान बड़ा हड्डाकट्टा और डीलडौल था। इसलिए राक्षस ने उसे

मार दिया और उसके टुकड़ों को सीखचों में लगाकर, आग में भूनकर वह आराम से हज़म कर गया और फिर उसी बेंच पर नाक बजाने लगा। हमें काटो तो खून नहीं। सवेरे उठकर जब तक राक्षस बाहर न चला गया, हममें से किसी ने चूँ तक नहीं की। फिर हम अपनी दयनीय हालत देखकर ज़ोर ज़ोर से रोने लगे। हमें कुछ न सूझा कि क्या करें। क्योंकि हमें कोई रोकनेवाला तब कोई न था। हमने मकान से बाहर ऐसी जगह खोजने की कोशिश की, जहाँ हम चुप-चाप छुपे रह सकें; पर





ऐसी जगह कहीं कोई मिली नहीं। कुछ ने सोचा कि उस राक्षस द्वारा आग में भुनकर उस तरह खाये जाने की अपेक्षा समुद्र में कूदकर आत्म-हत्या कर लेना अच्छा था। चूँकि मौत आगे बढ़ती आ रही थी, इसलिए हमने राक्षस को मारने की ठानी। मारने के बाद भागने की भी सोची। इसलिए हमने समुद्र के किनारे पड़े लकड़ियों को लेकर एक तमेड़ बनाई और शाम को फिर मकान में चले आये।

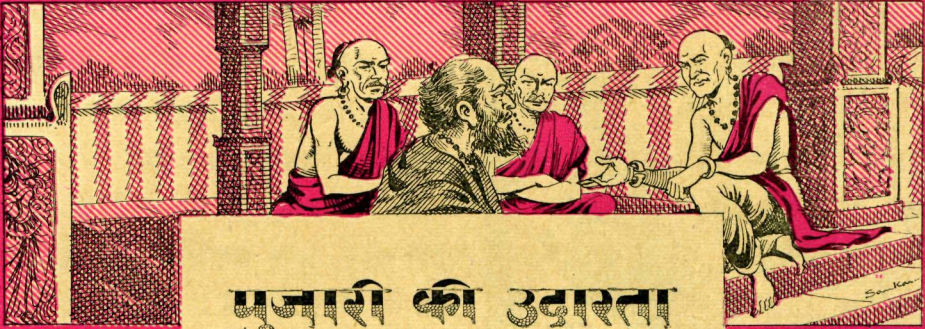
अपने निश्चित समय पर राक्षस आ ही पहुँचा। उसने हम में से फिर एक को मारा। उसको खा-पीकर, बेंच पर लेटकर जोर जोर से खुराटे मारने लगा। हम जो मौत से बच गये थे, बड़े-बड़े दो सीखचों को आग में तपाने लगे और लाल लाल सीखचों को आठ-दस आदमी उठाकर ले गये और उसकी आँखों में भोंक

आये। दर्द के मारे वह इतना चीखा-चिल्लाया कि कहा नहीं जा सकता।

उसकी आँख तो फूट गई थीं, पर वह मरा नहीं था। वह हमें टटोलने लगा; पर हम उससे बचकर निकल गये। वह खोजता खोजता दरवाजे से निकल गया। हम जान बचाकर समुद्र की ओर भागे और वहाँ रखी तमेड़ पर चढ़कर उसे समुद्र में खेने लगे।

इतने में हमें भयंकर आवाज़ सुनाई दी। उस अंधे राक्षस को उससे भी बदसूरत एक राक्षसी चलाकर ला रही थी। दोनों मिलकर समुद्र के किनारे आये। उन दोनों ने हमारी तमेड़ पर बड़े बड़े पत्थर फेंके। पत्थरों के कारण, सिवाय मेरे और दो-तीन के बाकी सब समुद्र में गिर गये। हम तीनों बड़ी मुश्किल से तमेड़ खेते हुए, उनके पत्थरों की पहुँच से दूर हो पाये।





पुजारी की उदारता

एक गाँव में एक पुजारी रहा करता था। वह बहुत भला-मानस था। वह रोगियों की चिकित्सा करता। गाँव के झगड़ों में बीच-बँटाव करता; दुःखी लोगों को दिलासा दिलाता। सब कोई उसकी प्रशंसा करता। वह और उसकी बूढ़ी माँ, मन्दिर के पास एक छोटे घर में रहा करते थे। उसकी न पत्नी थी, न बाल-बच्चे ही। मन्दिर की दो एकड़ भूमि में जो उपजता, उसी से वह अच्छा गुज़ारा कर लेता था। अगर कोई गाँव में रुपये-पैसे की दान-दक्षिणा देता, तो उसको जमा कर लेता। वह उस गाँव में बीस वर्ष से पुजारी का काम कर रहा था। गाँव के बड़े-बुजुर्ग उसका आदर करते थे। छोटे बच्चे भी उसको पिता की तरह मानते थे।

उसी गाँव में केवलराम नाम का एक किसान भी था। पहिले तो वह गरीब था

और छुटपन में ही उसके पिता गुज़र गये थे। उसने थोड़े दिन गौ-भैंसों चराई, फिर किसी के घर में नौकरी की। अपना पेट भर-भराकर वह अपनी कमाई का थोड़ा बहुत हिस्सा जमा भी कर लेता। फिर कभी खाता तो कभी न खाता; पर पैसे खूब बचाता। उसने जमा की हुई पूँजी से दूध का व्यापार शुरू किया। फिर वह धान का व्यापार करने लगा। देखते देखते केवलराम धनी हो गया। उसने एक मकान भी बनवा लिया, ज़मीन-जायदाद, बाग-बगीचे भी खरीद लिये।

गाँव में सब लोग केवलराम की अक्लमन्दी और होशियारी की तारीफ़ किया करते। पर किसी को उसकी कंजूसी पसन्द न थी। अब भी वह दमड़ी दमड़ी का हिसाब करके खर्चता। न अच्छा कपड़ा पहिनता, न



खाता ही; न पत्नी और लड़के को ही खाने देता।

केवलराम का एक ही लड़का था। नाम उसका गोविन्द था। केवलराम की दो बहिनें थीं। दोनों की विवाह योग्य लड़कियाँ थीं। उनमें से केवलराम की छोटी बहिन की लड़की, कमला बहुत सुन्दर थी, समझदार भी। गोविन्द उससे शादी करना चाहता था। परन्तु कमला की माँ बड़ी बुरी हालत में थी। उसका पति मर चुका था। माँ-बेटी घर घर नौकरी-चाकरी कर जिन्दगी बसर कर रहे थे।

केवलराम की बड़ी बहिन का परिवार ज़रा अच्छा था। उसके पति के पास थोड़ी बहुत ज़मीन थी। उसने थोड़े दिन पहिले केवलराम को सौ रुपये की ज़मीन बेची थी। परन्तु केवलराम ने उसको अभी तक पैसे नहीं दिये थे। वह उसको लड़के की दहेज में मिला लेना चाहता था। उसकी यह इच्छा थी कि गोविन्द उसकी लड़की से शादी करे। लड़की का नाम था लक्ष्मी।

जब गोविन्द को मालूम हुआ कि उसका पिता, उसकी शादी लक्ष्मी से करने की सोच रहा था तो उसने मन्दिर के पास जाकर पुजारी को सारी बात बताई।

“इसमें क्या बात है? तुम अपने पिता को साफ़ साफ़ कह दो कि सिवाय कमला से और किसी से तुम शादी न करोगे।”—पुजारी ने कहा।

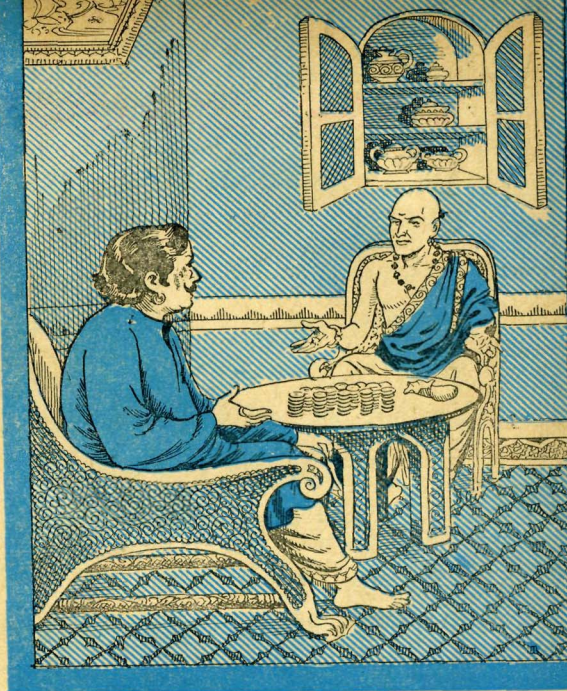
“अगर यह कहूँगा तो मुझे वे घर से बाहर निकाल देंगे। पैसे वग़ैरह के बारे में वे बड़े कमीने हैं। कैसे वे यों ही सौ रुपये छोड़ देंगे? हमारी छोटी बुआ कानी-कौड़ी भी दहेज में नहीं दे सकती। इसलिए मेरे पिताजी की नज़र में वे आदमी ही नहीं

हैं। तो इसका मतलब हुआ की मेरे भाग्य में कमला से शादी करना लिखा ही नहीं है।”—गोविन्द ने कहा।

“अपनी माँ से कहकर देखो। अगर उनका भी बस न चला तो देखेंगे।”—पुजारी ने कहा। गोविन्द घर चला गया।

उस दिन शाम को पूजा के बाद पुजारी मंडप में बैठा हुआ था। अन्धेरा हो चुका था और कोई सीढ़ियाँ चढ़कर मन्दिर के अन्दर जा रहा था। वह ठीक तरह पहिचान न पाया। जब पुजारी ने मन्दिर में जाकर देखा तो कमला मूर्ति के सामने बैठी प्रार्थना कर रही थी। उसको आँसू बहाता देख पुजारी को ऐसा लगा जैसे उसके दिल में हाथ डालकर कोई कुछ टटोल रहा हो। कमला के चले जाने के बाद वह बहुत देर तक सोचता रहा। उसने एक निश्चय भी कर लिया।

अगले दिन सवेरे उसने अपना जमा किया हुआ रुपया-पैसा ठीक तरह गिना। थोड़ा उसने रख लिया और बाकी लेकर वह शहर गया। वहाँ उसने उस रुपये से एक सर्राफ़ के यहाँ पचास सोने की सवरीन खरीदीं। फिर वह अपने गाँव चला गया।



पुजारी को अपने घर आया पा, केवलराम ने आश्चर्य से कहा—“आइये! बड़े लोग कभी यों ही नहीं आते हैं।”

“एक बात के बारे में आप से सलाह लेने आया हूँ। आज कोई दानी पचास सवरीन यह कहकर दे गया कि वह किसी गरीब, विवाह-योग्य लड़की के लिए दहेज में दिया जाय। उनके अपनी कोई लड़की न थी। मेरे भी बाल-बच्चे नहीं हैं। इसलिए मैं नहीं जानता कि किसे दूँ और किसे न दूँ। और लड़कियोंवालों से भी पूछना अच्छा नहीं। आपने दुनियाँ के सुख-दुःख

देखे हैं। इसलिए आप की सलाह के लिए आया हूँ।”—पुजारी ने कहा।

केवलराम ने ऐसे हाव-भाव किये जैसे कुछ सोच रहा हो। उसने कुछ नाम बताये। उनमें से कई की शादी हो चुकी थी, और कई का चाल-चलन अच्छा न था। पुजारी को कोई भी न जँची।

“हाँ, भूल गया। मेरी बहिन की एक लड़की है, लक्ष्मी। उनकी हालत ऐसी खास अच्छी नहीं है। लड़की की शादी करनी है। लड़की अच्छी समझदार है।”—केवलराम ने खुशी खुशी कहा।

“अगर यही बात है तो लक्ष्मी के बजाय कमला को देना अधिक अच्छा है। बिचारी माँ-बेटी, जाने क्या क्या तकलीफें झेल रही हैं। उनका गुज़ारा नहीं हो रहा है। मुझे कमला को ही देने की इच्छा हो रही है। कल या परसों आपकी बहिन को बता दूँगा। तब तक इस सोने को आप अपने पास ही रखिये। भला इसे रखने के लिए मेरे पास तिज़ोरी बग़ैरह कहाँ है?” कहते हुए पुजारी ने सवरीन उसके सामने ठनठना दी।



उसको देखते ही केवलराम की आँखें चौंधियाँ गईं। उसने उनको तिज़ोरी में रखा और चाबियों को गाँठ में रख लिया। दिन भर उसकी आँखों के सामने वे सवरीन चमचमाती रहीं। उसे लगा, अगर कल या परसों पुजारी उसे ले गया तो तिज़ोरी खाली-सी लगेगी।

उस दिन शाम को गोविन्द फिर पुजारी के पास गया।

“क्या तूने अपने पिता से कहा कि सिवाय कमला के किसी और से तू शादी नहीं करेगा?”—पुजारी ने पूछा।

“नहीं तो। कहने से क्या फ़ायदा? मैंने माँ से कहकर देखा, पर वे क्या कर सकती हैं? सुना है, कमला कुछ खा-पी नहीं रही है।”—गोविन्द ने कहा।

पुजारी मन ही मन हँसा। पर गुस्से का ढोंग करते हुए उसने उसे डाँटा-ड़पटा—
“अरे पापी, क्यों बिना किसी कारण उस बिचारी कमला को मार रहा है? तुरत जाकर अपने पिता से पूछ। मैं भी देखता हूँ कि वे क्यों तेरी बात नहीं मानेंगे।”

पुजारी के यह कहने पर गोविन्द का भी हौसला बढ़ा। फ़ौरन घर जाकर उसने अपने



पिता से कहा—“पिता जी! मैं लक्ष्मी से विवाह नहीं करूँगा। मेरी कमला से ही शादी करो। नहीं तो मैं शादी ही नहीं करूँगा।”

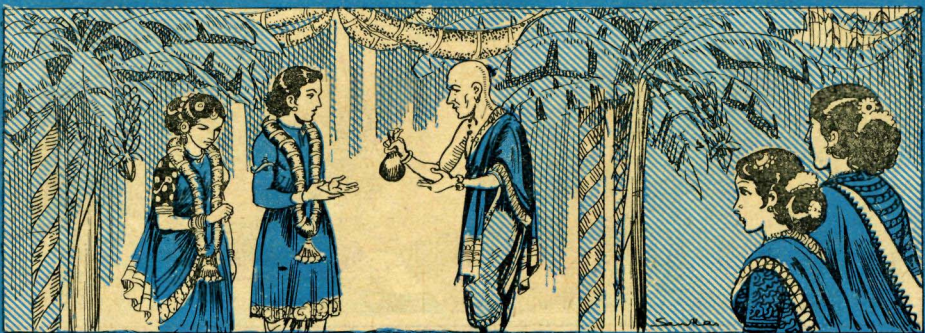
केवलराम उसकी बात सुनकर थोड़ी देर तक भौंचक्का रहा, पर थोड़ा सोचने-समझने के बाद उसको भी यह बात जँची। क्योंकि जब से पुजारी ने पचास तोला सोना कमला को देने की सोची थी, उसकी अक्ल ठिकाने नहीं थी। वह यह माथापच्ची कर रहा था कि उस सोने को लक्ष्मी को कैसे दिलवाये। पर जब गोविन्द ने यह कहा कि वह कमला से ही विवाह करेगा तो उसे लगा, जैसे सिर पर से मानों बोझ हट गया हो। उसी के भाग्य में सोना लिखा था। नहीं तो केवलराम ने सोचा कि यह यकायक क्यों कमला से शादी करना मान गया। वह उसकी बात भी पहिले कभी न करता था।

“अच्छा, जैसी तेरी मर्जी।”—केवलराम ने गोविन्द से कहा। उसने उसी दिन अपनी बहिन को बुलाकर कहा कि वह गोविन्द और कमला के विवाह का प्रबन्ध कर रहा है।

इस बात का पता लगते ही उसकी बड़ी बहिन के पति ने आकर कहा—“तुम तो कह रहे थे कि तुम्हारा लड़का लक्ष्मी से शादी करना चाहता है। वचन देकर क्यों मुकर रहे हो?”

“मैं भी क्या कह सकता हूँ? क्या मेरे लिए लक्ष्मी और कमला दोनों अलग अलग हैं? गोविन्द ने ज़िद पकड़ रखी है।” केवलराम ने कहा।

कमला और गोविन्द का विवाह हो गया। पुजारी ने पचास तोला सोना कमला को दिया। पर उस गाँव में किसी को यह न मालूम था कि उस विवाह के करवाने में पुजारी ने किस तरह मदद की थी।



कौआ और उलू

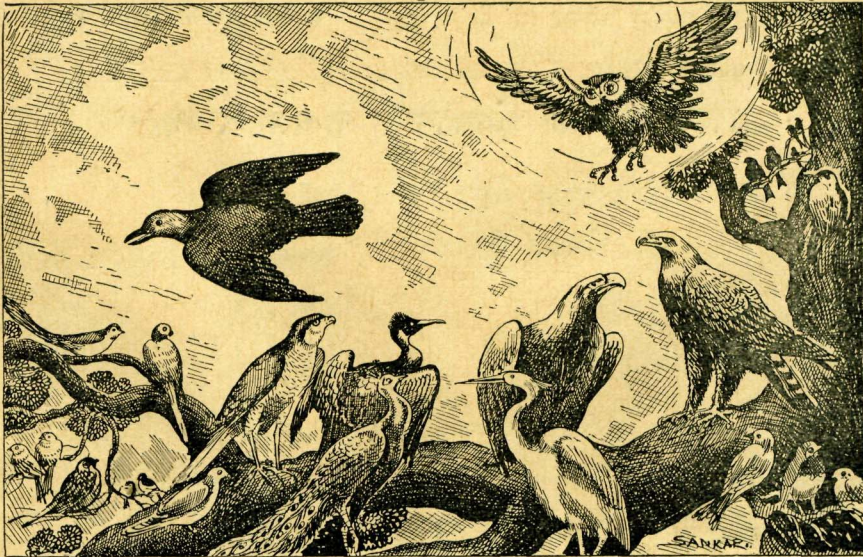
ब्रह्मा ने एक दिन सब पशु-पक्षियों को बुलाकर कहा—“तुम मनुष्यों की तरह क्यों नहीं एक राजा को चुन लेते?”

पशुओं ने तुरत सभा बुलाई, और सिंह को अपना राजा चुन लिया।

समुद्र के जलचरों ने मिल कर आनन्द नाम के मच्छ को अपना राजा चुना।

परन्तु पक्षियों ने कुछ न किया। यह देख ब्रह्मा ने पक्षियों को सलाह दी कि वे भी मिलकर एक राजा को चुन लें।

लाचार हो पक्षियों को एक सभा बुलानी पड़ी। किसी ने राजा के पद के लिए उलू के नाम का प्रस्ताव किया। पर कौआ ने इस पर आपत्ति की। “इस की शक्ल ही टेढ़ीमेढ़ी है, मैं कभी भी उलू को राजा नहीं मानूँगा।” यह सुन उलू कौआ के पीछे भागा। सभा में हलचल मच गई। तब से कौआ और उलू जानी-दुश्मन हैं।



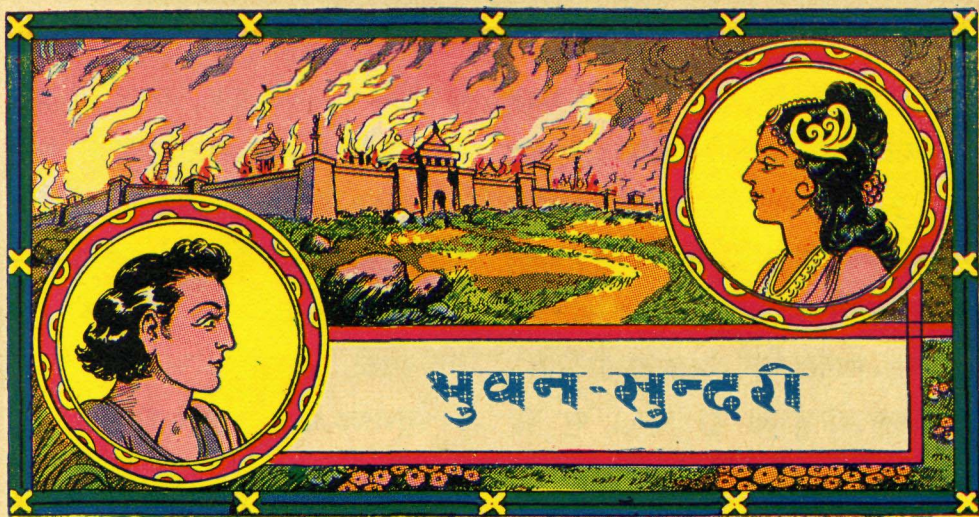
बताओगे ?



- | | |
|--|--|
| १. डा. मेन्जीस किस देश के प्रधान मन्त्री हैं ? | ६. राजा हर्ष की क्या रचनायें थीं ? |
| २. भारत के दो पड़ोसी देश कौन-से हैं, जिनमें आपस में सन्धि हुई है ? | ७. 'केप आफ गुड होप' का रास्ता किसने पता लगाया था ? |
| ३. पुनर्व्यवस्थित प्रान्तों में सबसे बड़ा प्रान्त कौन-सा है ? | ८. जकार्ता किस देश की राजधानी है ? |
| ४. बम्बई प्रान्त की दो मुख्य भाषाएँ कौन-सी हैं ? | ९. दक्षिण की प्रसिद्ध कागज़ की फैक्टरी कहाँ है ? |
| ५. फिरदौसी किसके दरबार में कवि थे ? | १०. मेगस्थनीज़ किस काल में आया था और उसकी पुस्तक क्या है ? |

पिछले महीने के 'बताओगे ?' के प्रश्नों के उत्तर :

- | | |
|--|--|
| १. मिश्र में । भूमध्य सगर और लाल सागर को मिलाती है । यह ११० मील लम्बी है । | ६. नहीं । |
| २. अफ्रीका के दक्षिणी छोर में । | ७. अगले वर्ष में सम्भवतः फरवरी मास में । |
| ३. हाँ । | ८. नहीं । |
| ४. हैदराबाद में । | ९. दे सकती हैं । |
| ५. उत्तर जर्मनी में । | १०. वर्तमान आन्ध्र, जहाँ पहिले ही निर्वाचन हो चुके हैं । |



[२]

[द्रोण नगर के राजा वर्धन ने पशुपालक को बुलाकर मोहन को मारने की आज्ञा दी। पर उसने मोहन को पाल-पोसकर बड़ा किया। एक दिन देवलोक से तीन अप्सराएँ मोहन के पास आयीं और यह निर्णय करने के लिए पूछा गया कि उनमें सबसे अधिक सुन्दरी कौन थी! मोहन ने कामिना को चुन लिया! उसके बाद.....]

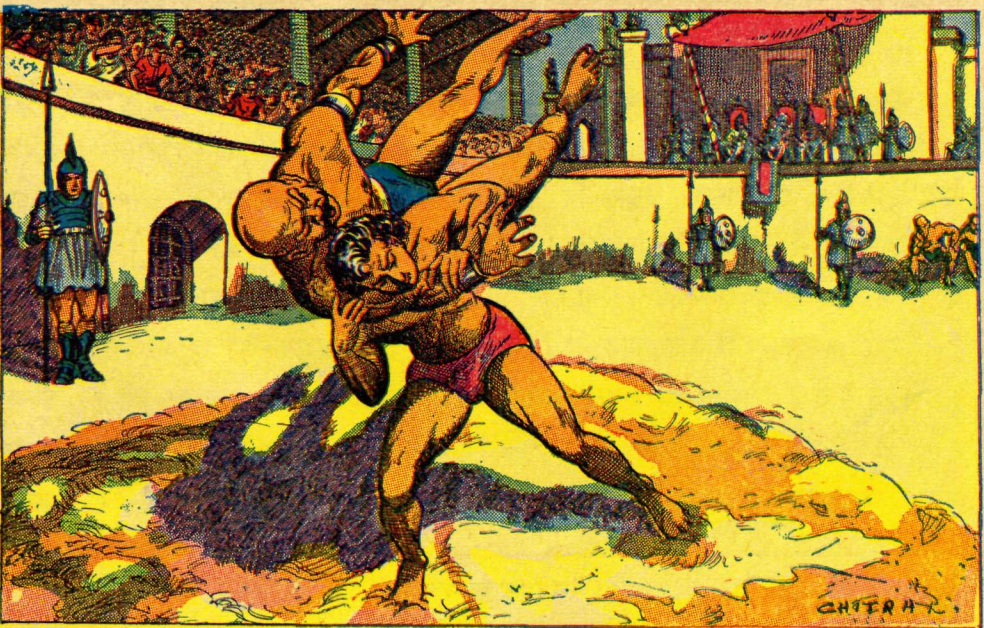
जब से वर्धन ने पशुपालक को यह वह ऐसे सब से अधिक बलवान साँड़ को आज्ञा दी थी की वह उसके लड़के को चुनकर दे, जो उत्सव में होनेवाले मुठभेड़ मार दे, तब से वह उसकी स्मृति में प्रति में हिस्सा ले सकें और उत्सव में भाग वर्ष रोम नगर में उत्सव मनाया करता। उस लेनेवालों को चकित कर दें।
उत्सव में तरह तरह के प्रदर्शन होते। इन उत्सवों को मोहन ने कभी न देखा

मोहन के कामिनी को फल देने के था। उसे विशेषकर पशुओं के मुठभेड़ कुछ दिन बाद ही उत्सव का समय आया। को देखने की इच्छा हुई। उसने वर्धन के सैनिक एड़ा पर्वत पर आये रोम नगर जाने की ज़िद पकड़ी। इसलिए और पशुपालक से उन्होंने कहा कि पशुपालक घबराने लगा, जाने क्या आफत

[एक ग्रीक पुराण कथा]



आये। अगर राजा वर्धन को यह मालूम जाता था। उनमें एक मल्लयुद्ध भी था। हो गया कि जिस लड़के को उन्होंने मार कई स्थानों से मल्ल आते और वे वर्धन देने के लिए कहा था, उसे पाल-पोसकर के सिंहासन के सामने मल्लयुद्ध किया करते। मैंने बड़ा कर दिया है, तो वे क्या नहीं कोई भी मल्ल दंगल में भाग ले सकता था। करेंगे? उसने यह सब मोहन को समझाया, कोई रोक-टोक नहीं थी। जो सबको जीत पर वह अपनी ज़िद पर अड़ा ही रहा। लेता उसको "मुकट" दिया जाता। पशुपालक को झुकना ही पड़ा। पर वह पशुपालक के बहुत मना करने पर भी, उसको अकेला नहीं जाने देना चाहता था, मोहन ने उस मल्लयुद्ध में भाग लिया और इसलिए वह भी उसके साथ राजधानी के सब को हराकर मुकट भी जीत लिया। लिए निकल पड़ा। उसके बाद उसने दौड़ में सब के आगे बड़ी तेज़ी से दौड़कर एक और मुकट भी प्रकाश की प्रतियोगिताओं का प्रबन्ध किया जीत लिया। जब मोहन ने दो मुकट जीत





लिये तो वर्धन के लड़कों की नज़र उस पर गई। उसका 'मुकुट' जीतना उन्हें बुरा लगा। ऐरे-गैरे मोहन को हटाने के लिए उन्होंने उसे कुश्ती के लिए ललकारा।

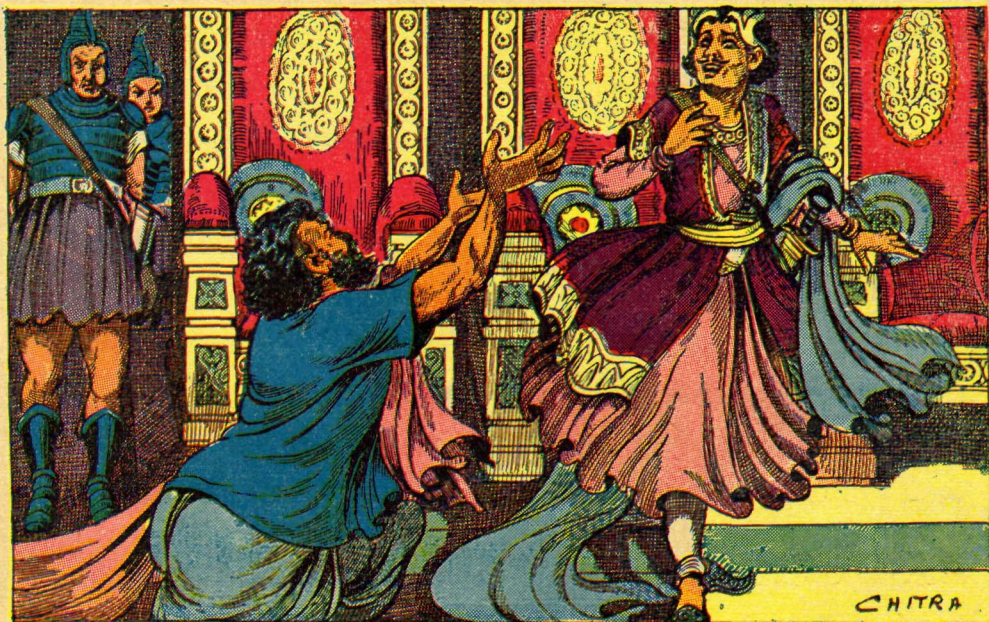
उस कुश्ती में भी मोहन ही जीता। उसको तीसरा मुकुट मिला। वर्धन के लड़कों को हार माननी पड़ी।

अब वर्धन के लड़कों ने मोहन को मार देने की ठानी। मोहन कहीं अखाड़े में से न चला जाय, इसलिए सशस्त्र सैनिकों का चारों ओर पहरा लगाकर वे दोनों-वीर सिंह, और अरिभयंकर, तलवार निकाल कर

मोहन की ओर लपके। और अजीब बात यह थी कि अरिभयंकर और मोहन एक ही पिता के पुत्र ही न थे, अपितु एक ही माता के सन्तान भी थे। परन्तु वे दोनों यह बात न जानते थे।

यह जानकर कि मामला बहुत उलझ रहा था, पशुगालक ने वर्धन के पास जाकर कहा—“महाराज! मोहन को बचाइये। वह भी ही आपका ही लड़का है।”

राजा को इसका शोक न हुआ कि उसका लड़का मारा न गया था। आज्ञा उलंघन करनेवाले पशुगालक पर भी उन्हें





दीजिये। नहीं तो रोम नगर नष्ट हो जायेगा। बड़ा अनर्थ हो जायेगा। हमारी बात मान जाइये।”

“इतने सफल समर्थ पुत्र को नहीं छोड़ूँगा, भले ही रोम नगर नष्ट हो जाये।” वर्धन ने गर्वपूर्वक कहा।

अब मोहन, वर्धन के पुत्रों में एक था। उसके भाइयों के विवाह पहिले ही हो चुके थे। उनकी पत्नियाँ भी उनके साथ रह रही थीं।

“तू भी शादी करले न!” उन्होंने मोहन से पूछा।

मोहन हमेशा उस कामिनी देवी की ही पूजा करता आया था। “मेरे लिए उचित पत्नी यह देवी ही ढूँढ़कर देगी। मुझे पत्नी के लिए दौड़-धूप करने की ज़रूरत नहीं है।” उसने अपने भाइयों को जवाब दिया।

पर वह जानता था कि वह सुवन सुन्दरी, जिसे वह चाहता था स्पार्टा में थी। वह स्पार्टा जाने के मौके की तलाश में था। शीघ्र ही उसे वहाँ जाने का मौका मिल गया।

वर्धन की एक छोटी बहिन थी। उसका नाम सुलोचना था। कुछ समय पहिले

गुस्सा न आया। यह जानकर कि उनका लड़का जीवित था और वह इतना पराक्रमी और बलवान हो गया था, वे फूले न समाते थे।

उन्होंने आज्ञा दी कि उनके लड़के के फिर मिल जाने पर खुशियाँ मनाई जायँ, और दावतें दी जायँ। देवताओं को बलि देने के लिए भी कहा गया। मोहन को देखकर वे जितना गर्व कर रहे थे, और खुश हो रहे थे, उन्होंने किसी पुत्र को देखकर उतना गर्व कभी न किया था।

पुजारियों ने वर्धन को सावधान किया—“महाराज! मोहन को तुरत मरवा



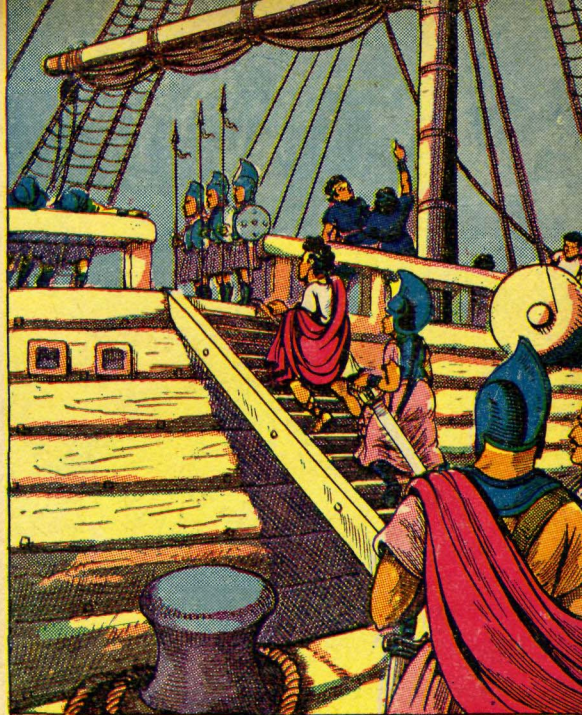


उसको ग्रीस देश वाले उठा ले गये थे। इस घटना के बाद वर्धन ने एक सभा यह निर्णय करने के लिये बुलाई कि युद्ध करके सुलोचना को छुड़ाना अच्छा था या शान्ति मार्ग से। सभा के निर्णय के अनुसार शान्ति-मार्ग ही उत्तम समझा गया। ट्रॉय नगर से ग्रीस दूत भेजे गये। उन्होंने उनसे सुलोचना को वापिस भेजने का आग्रह किया। पर ग्रीस न माना। राजा का प्रयत्न असफल रहा।

फिर सभा बुलाई गई। इस बार सभा ने निश्चय किया कि ग्रीस पर आक्रमण करना ही होगा।

“इस आक्रमण की जिम्मेवारी मुझ पर छोड़िये। मुझे ज़रूरी नौकायें और सैनिक दीजिये। मैं ग्रीस के लिए रवाना होऊँगा। मैं सुलोचना को छुड़ा ले आऊँगा। अगर वह न भी आ सकी, तो उसके बराबर एक ग्रीक राजकुमारी को ले आऊँगा।” मोहन ने अपने पिता से कहा।

यह बात जिस दिन गुज़री, उसी दिन भुवन-सुन्दरी का पति, प्रताप, स्पार्टा से ट्रॉय आया। उसके आने का कारण यह था कि यकायक स्पार्टा में महामारी शुरू हो



गई थी। ट्रॉय नगर की देवी-देवताओं को बलि देकर वह उस महामारी को शान्त करना चाहता था।

मोहन ने प्रताप की बहुत आवभगत की। उससे दोस्ती भी कर ली। “मैं भी आपके स्पार्टा में, वहाँ की देवी-देवताओं की पूजा कर पुण्य कमाने की तैयारी कर रहा हूँ।” मोहन ने प्रताप से कहा। प्रताप यह सुन बड़ा खुश हुआ।

जल्दी ही मोहन के लिए नौकायें इकट्ठी कर दी गईं। उनमें, मोहन के साथ प्रताप भी आया। वे कुछ समय बाद स्पार्टा





परन्तु उसने अपने प्रेम के बारे में अपने पति से न कहा। किन्तु मोहन अपनी इच्छा के विषय में उसे कहे बगैर न रह सका। भुवन-सुन्दरी बहुत घबराने लगी कि कहीं ऐसा न हो कि उसके पति को यह पता लग जाये।

मोहन स्पार्टा नगर में नौ दिन प्रताप का मेहमान होकर रहा। इस बीच में प्रताप के बाबा गुज़र गये और प्रताप को उनकी अन्त्येष्टि आदि के लिए क्रीट द्वीप तक जाना पड़ा।

पहुँचे। भुवन-सुन्दरी के लिए मोहन कई तरह तरह के उपहार लाया था। उन सब को उसे देकर वह उन्हीं के घर में, अतिथि के रूप में रहने लगा।

मोहन, भुवन-सुन्दरी को देखते ही जान गया कि उससे अधिक सुन्दर स्त्री संसार में न थी। कामिनी देवी की कृपा से वह उसे अपने साथ ले जाने के लिए उतावला होने लगा।

कामिनी देवी के प्रभाव से, भुवन-सुन्दरी के मन में भी, जब से उसने मोहन को देखा था, मोहन के प्रति प्रेम होने लगा।

मोहन ने सोचा कि यह सब कामिनी देवी की ही कृपा थी। उसने भुवन-सुन्दरी को साथ आने के लिए मना लिया। उसी दिन रात को वे दोनों मोहन की नौका में घुस गये। नौकायें ट्रोय नगर की ओर चलीं। मोहन वापसी रास्ते में कई द्वीपों में पड़ाव करता गया। इसलिये कई दिनों बाद ट्रोय नगर में पहुँचा।

और इधर; जब प्रताप, बाबा की अन्त्येष्टि और तेरहवीं करके घर लौटा तो उसे पता लगा कि उसका मेहमान, मोहन उसको कैसे धोखा दे गया था। तुरत उसने अपने बड़े भाई से, जो वहाँ का राजा





था, सारी बात सुनाकर कहा—“ट्रोंय नगर पर हमला करने के लिए तैयारियाँ करवाइये।”

“तुम जल्दी मत करो। मैं ट्रोंय नगर को दूत भेजकर, तेरे और तेरी पत्नी पर किये गये धाखे के बदले पूरा हरजाना वसूल कर लूँगा। अगर वे बातों से न माने तो युद्ध करना ही होगा।” राजा ने कहा।

जब राजा के दूत ट्रोंय नगर पहुँचे, तब तक मोहन भुवन-सुन्दरी के साथ वापिस वहाँ न पहुँचा था। इसलिये दूतों ने जो कुछ उसके पुत्र के बारे में कहा, वर्धन ने विश्वास नहीं किया।

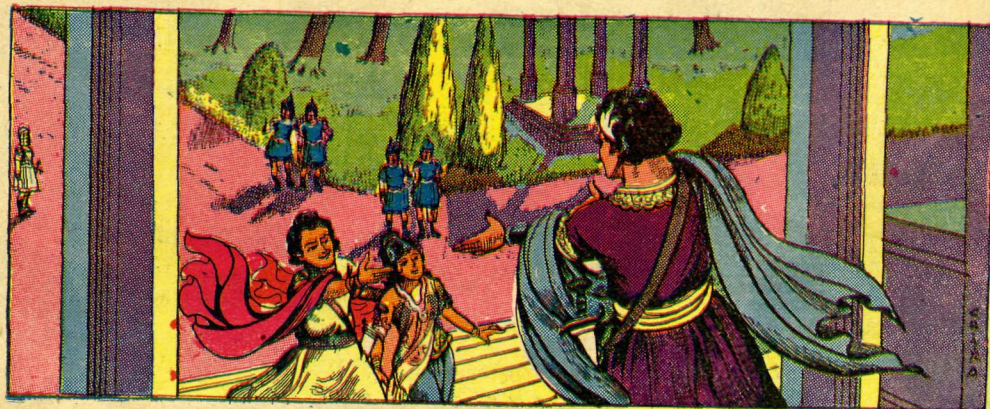
“जो तुम कह रहे हो, उसके बारे में मैं कुछ नहीं जानता हूँ। मान भी लिया जाय कि मेरा लड़का तुम्हारी राजकुमारी को भगा ले गया है फिर भी हरजाना देने

की मुझे कोई ज़रूरत नहीं है। ग्रीक मेरी बहिन सुलोचना को ले गये, मुझे उन्होंने इसके लिए क्या हरजाना दिया?” वर्धन ने दूतों से पूछा।

इस तरह दूतों को वापिस भेजने के बाद भी वर्धन किसी तरह न पछताया। क्योंकि जब मोहन, भुवन-सुन्दरी को लेकर आया तो उसका सौन्दर्य देखकर वह बहुत खुश हुआ। मोहन और वर्धन ही नहीं, उस नगर में ऐसा कोई न था, जो भुवन-सुन्दरी जैसी सुन्दर स्त्री के ट्रोंय नगर में आने पर खुश न था।

मोहन और भुवन-सुन्दरी की बड़े धूम धाम से शादी हुई।

“ग्रीक भले ही हजारों वर्ष सिर के बल तपस्या करें, मैं उनको भुवन-सुन्दरी न दूँगा।” वर्धन ने सब के सामने प्रतिज्ञा की। [अभी और है]





कामयाब लड़का

एक नगर में एक धनी व्यापारी रहा करता था। उसके तीन लड़के थे। जब उनकी शिक्षा समाप्त हुई तो पिता ने एक एक को बुलाकर पूछा—“बेटा! तुम रोज़ी के लिए क्या करना चाहते हो?”

बड़े लड़के ने पिता से कहा—

“पिताजी! यदि आपने मुझे ज़रूरी रुपया पैसा दिया तो मैं वैद्यक सीखूँगा और औषधियाँ बनाकर रोगियों की चिकित्सा करूँगा। और अपने ही ढंग से अपनी रोज़ी बना सकूँगा।” पिता ने उसको उसकी इच्छानुसार कुछ रुपया दे दिया।

दूसरे लड़के ने पिता से कहा—

“पिताजी! मैं भी आपकी तरह व्यापार करके रुपया कमाना चाहता हूँ। मुझे आप इसके लिए पूंजी दीजिये। काफ़ी है।” उसकी इच्छानुसार पिता ने उसको भी पूंजी दी।

परन्तु तीसरे लड़के ने जिसका नाम—चन्द्रकान्त था, तुरत यह न बताया कि वह ज़िन्दगी में क्या करना चाहता था। जब पिता ने ज़ोर देकर बार बार पूछा तो उसने कहा—“पिता जी! मैं चोर बनना चाहता हूँ।”

पहिले तो उसके पिता और भाइयों को आश्चर्य हुआ। फिर उन्हें बेहद गुस्सा आया।

“अरे तेरी हालत क्या इतनी बुरी है कि तुझे चोरी करने की सूझी? इस तरह के आलू-फ़ालू बातें छोड़कर कोई अच्छा-सा पेशा कर” पिता ने अपने तीसरे लड़के को डाँटा-डपटा।

परन्तु उसकी अक्ल ठिकाने न आई।

“इस संसार में चोरों की मान-मर्यादा होती है, मैं चोर बनकर ही रहूँगा।” तीसरे लड़के ने ज़िद पकड़ी।



“यही बात है तो तू मेरा घर छोड़कर जा सकता है। तुझे मैं कानी-कौड़ी भी न दूँगा। अगर तुझे सज़ा हुई, तो न मैं ही पूछने-ताछने आऊँगा, न तेरे भाई ही। तू अपना रास्ता देख; हमारे भरोसे मैं न रह।” व्यापारी ने अपने तीसरे लड़के से साफ़ साफ़ कह दिया।

यह बात किसी और को पता लगने से पहिले ही, चन्द्रकान्त ने पिता के मुन्शी के पास जाकर कहा—“बहुत ज़रूरी काम है। मुझे पाँच हजार अशर्कियाँ उधार चाहिये, दीजिये।” मुन्शी ने पाँच हजार अशर्कियाँ

दे दीं। व्यापारी का तीसरा लड़का, चन्द्रकान्त, पाँच हजार अशर्कियाँ लेकर उसी दिन रात को कहीं चला गया।

कई वर्ष बीत गये। व्यापारी बूढ़ा हो गया। उनसे होड़ करनेवाले कई सारे हो गये थे। उन सब ने मिलकर उनका व्यापार चौपट कर दिया था। उन लोगों ने सरकारी कर्मचारियों को धूस दी और कर्मचारियों ने उनके माल को इधर उधर भेजना बन्द कर दिया। उन्हें ज़रूरत होने पर कर्ज़ भी न मिलता। जिन पर उनका कर्ज़ था, उन्होंने उसे दबा लिया। धीमे धीमे उसकी हालत यह हो गई कि उसे अपने पालन-पोषण के लिए लड़कों का मुँह ताकना पड़ा।

और तो और, उन लड़कों की भी हालत अच्छी न थी। बड़े लड़के ने वैद्यक सीख कर एक बड़े नगर में वैद्यक शुरू कर दी। उस नगर में वैद्यों ने, जैसे भी हो उस वैद्य को नगर से चलता करने की ठानी। उन्होंने उससे जान पहिचान करके कहा—“तुम बेफ़िक्र रहो। हो सकता है कि तुम्हें नया जान तुम्हारे पास कोई मरीज़ न आयें। हमारे पास जो

घनी मरीज़ आते हैं, हम उनको तुम्हारे पास भेज देंगे। अगर तुम्हारी शोहरत बढ़ गई, तब तुम्हें किसी और की मदद की ज़रूरत ही न होगी।” पर उसकी पीठ पीछे वे ही वैद्य कहा करते—“इस नये वैद्य को कुछ आता जाता नहीं है। अपने गाँव में उसकी चलती नहीं थी। इसलिये अब शहर में आया है। जब तक एक मरीज़ उसके हाथों से जीता जी बाहर नहीं निकलता उसका कोई भरोसा नहीं।”



जब उनके रोगियों को मरने की नौबत आती तो वे उन्हें व्यापारी के लड़के के पास भेज देते। सब रोगों की औषधियाँ तो होती नहीं। इसलिये वे रोगी, नये वैद्य के हाथ में आकर मर जाते। इस तरह चार पाँच रोगियों के मर जाने के बाद उन्हीं वैद्यों ने व्यापारी के लड़के के पास आकर कहा, “जो रोगी तुम्हारी चिकित्सा में मरे हैं, वे बहुत हैसियतमन्द थे। मालूम हुआ है कि प्रधान मन्त्री तुम्हें सज़ा देने की सोच रहे हैं। होशियार रहो।”

व्यापारी का बड़ा लड़का घबरा गया। वह वैद्यक से ही ऊब गया; उससे उसको

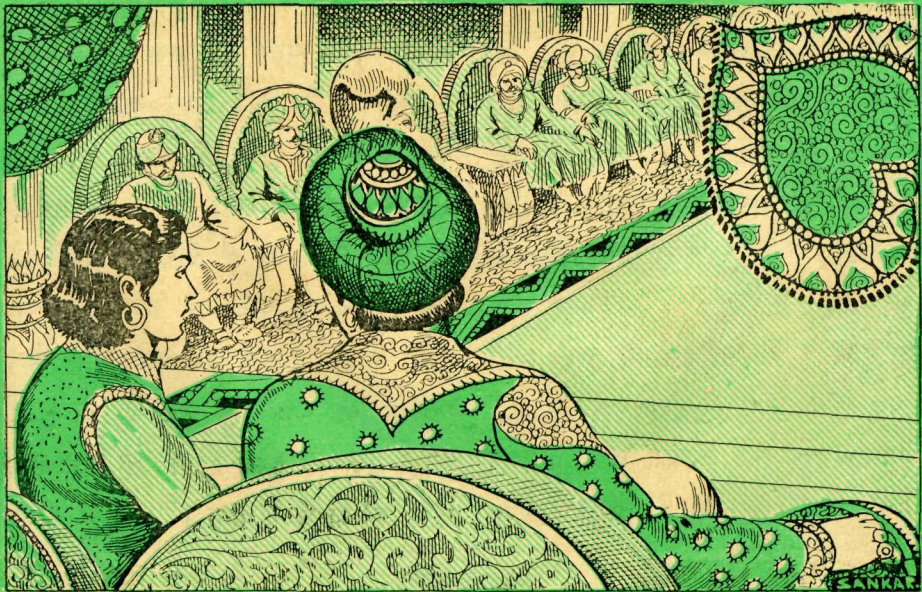
घृणा होने लगी। वह उसी दिन रात को बोरिया-विस्तर बाँधकर, पत्नी और बच्चों को लेकर, अपने पिता के पास चला गया।

व्यापारी के दूसरे लड़के की हालत भी कुछ ऐसी थी। क्योंकि उसके पिता का व्यापार चौपट हो गया था। इसलिये उसे भी किसी ने उधार न दिया। उसने लेन देन का व्यापार बन्द कर दिया। वह एक छोटी मोटी दुकान खोलकर चीज़ें बेचने लगा। पर उसमें भी फ़ायदा न हुआ। बल्कि नुक़सान हुआ। वह भी रोता धोता पिता की शरण में गया।

चन्द्रकान्त के बारे में कुछ पता ही न था। पाँच हज़ार अशर्कियाँ लेकर, कुछ दिनों के सफ़र के बाद, चन्द्रकान्त एक देश में पहुँचा। वह एक छोटा-सा देश था। चन्द्रकान्त वहाँ के राजा से मिला और उसने वे पाँच हज़ार अशर्कियाँ उनको नज़राने में दे दीं। राजा अपने लालच के लिए बदनाम था। अशर्कियाँ देखते ही उसे बड़ी खुशी हुई। उसने चन्द्रकान्त से पूछा—
“आप कौन हैं? कहाँ के हैं? आप मुझसे क्या सहायता चाहते हैं?”

“महाराज! मुझे कोई मणि-मोती नहीं चाहिये। मुझे सिर्फ़ अपने दरबार में रोज़ आने दीजिये। दरबार में मुझसे आप दो मिनट अलग बातचीत कीजिये। अगर आपने ऐसा किया तो आपको मैं रोज़ इस तरह की पाँच हज़ार अशर्कियाँ दूँगा।” चन्द्रकान्त ने राजा से कहा।

राजा को आश्चर्य हुआ। उनकी नौकरी में कितने ही लोग थे। पर सब उनसे पैसा लेते ही थे, देता कोई न था। चन्द्रकान्त को भी उसने अपनी नौकरी में रख लिया, और उसको



रोज़ एकान्त में बात करने की अनुमति भी दे दी।

अगले दिन चन्द्रकान्त दरबार में गया। उसने यह मालूम किया कि कौन दरबारी कितना धनवान था। जब उसने उस दिन राजा से एकान्त में बातचीत की तो वह गौर से एक रईस की ओर देखता गया। दरबार के खतम होने पर उस रईस ने चन्द्रकान्त के पास जाकर पूछा—“राजा

आपसे कोई बात कान में कह रहे थे, और आप मेरी तरफ़ देख रहे थे! बता सकेंगे कि क्या बात थी? बताइये

आपका कर्ज़ नहीं रखूँगा। भरसक देने की कोशिश करूँगा।”

“राजा आप से बहुत बिगड़े हुए हैं। मुझे वजह नहीं मालूम है।” चन्द्रकान्त ने कहा।

यह सुनते ही रईस के होश-हवास जाते रहे। उसने कहा—“जैसे भी हो आप राजा का गुस्सा हटाइये, आप जितना माँगेंगे, उतना दूँगा।

“दस हज़ार अशफ़ियाँ दीजिये। राजा को खुश करने के लिए मैं आपकी तरफ़ से उनको एक क्रोमती उपहार दूँगा” चन्द्रकान्त ने कहा। रईस ने दस हज़ार अशफ़ियाँ दे



दीं। उसमें से पाँच हजार अश्रुफियाँ ले जाकर चन्द्रकान्त ने राजा को दीं।

इस तरह रोज़ चन्द्रकान्त राजा से एकान्त में बात करता, और बात करते हुए किसी की ओर गौर से देखता। वह व्यक्ति घबरा जाता और उसको मुँह माँगा धन देता और उसमें से वह पाँच हजार अश्रुफियाँ राजा को देता। दिन गुज़रते गये। हर कोई चाहे मन्त्री हो या दीवान, अमीर या व्यापारी चन्द्रकान्त को इस प्रकार घूस दिया करता। राजा भी उसके दिये हुए धन से बहुत धनी हो गया। उसका उस पर बहुत विश्वास हो गया। इसलिये चन्द्रकान्त का प्रभाव सारे राज्य में फैल गया। उसने बहुत-सा रुपया-पैसा भी कमा लिया।

और इधर बूढ़ा व्यापारी, उसके लड़के, और उनकी पत्नियाँ और बच्चे बड़ी गरीबी में थे। उन्हें भोजन भी ठीक तरह नसीब

न होता था। एक दिन उनके घर के सामने बारह पालकियाँ, और सैकड़ों बेहंगियाँ आईं। राजा के सैनिकों ने अन्दर जाकर व्यापारी से पूछा—“क्या आप ही फ़लाने आदमी हैं?” उनके हाँ कहने पर उन्होंने बेहंगियाँ और पालकियों में लदे जेवर-जवाहरात, कपड़े, रुपये-पैसे आदि, अन्दर रखे। सैनिकों ने कहा—“आपके तीसरे लड़के ने आपके लिए ये सब चीज़ें भेजी हैं। आप जब आना चाहें, तब आपके लिए पालकियाँ तैयार हैं।”

व्यापारी और उनके बड़े लड़कों को बेहद खुशी हुई कि जो चोर बनना चाहता था वह इतना कामकाजी हो गया था। यह सोच उन्हें आश्चर्य भी हो रहा था। चन्द्रकान्त की भेजी हुई पोशाक-आभूषण पहिन कर वे उसी दिन पालकियों में चढ़कर उसके पास चले गये।





मित्र-भेद

“वणिकपुत्र था एक नगर में
दन्तिल था उसका शुभ नाम,
बहुत धनी औ’ सज्जन था वह
करता नित अच्छा ही काम।

दौलत की तो कमी नहीं थी
था पुर के लोगों में मान,
उसके गुण पर खुश हो करते
राजा भी दिल से सम्मान।

एक बार उसने शुभ दिन में
बेटी का रचवाया ब्याह,
खर्च किया उसने इतना था
लोग उठे दिल से कर ‘वाह’!

आमंत्रण पाकर के उसका
आये बड़े-बड़े थे लोग,
तरह तरह के मिष्टान्नों का
लगा रहे थे वे सब भोग।

नम्र निवेदन पर दन्तिल के
कर न सके राजा इनकार,

वे भी आये ब्याह देखने
छोड़ सजा अपना दरबार।

व्यस्त भाव से दौड़ दौड़ कर
सब का ही करता सत्कार,
पूछ रहा था दन्तिल सबसे—
‘कहें भला क्या है दरकार!’

उसी समय उस दावत में इक
आ पहुँचा पूरा अहमक,
राजा का था दास और वह
कहलाता था गोरंभक।

बिना विचारे जा बैठा वह
बड़े-बड़े लोगों के बीच,
दन्तिल क्रोधित हुआ देखकर
कैसे आ पहुँचा यह नीच!

धक्के दे देकर उसने झट
उसे वहाँ से दिया निकाल,
पर गोरंभक ने भी बदला
लेने की सोची तत्काल।

कुछ दिन बीते, एक दिवस जब
बैठा था राजा के पास,
गोरंभक कुछ उठा बड़ा-बड़ा
ज्यों सपने का हो आभास ।

‘पहुँच गया कैसे रानी के
दन्तिल निकट, बाप रे बाप !
बुरी बात यह, बुरी बात !!’—यों
बोल उठा अपने ही आप ।

राजा चौंक उठे यह सुनकर
बोले ‘क्या बकते हो मूर्ख !’
जगा नींद से अभी अभी हो
त्यों ही कर आँखों को सुख

बोला गोरंभक डरता-सा—
‘नहीं नहीं कुछ भी है बात ।
शायद बड़-बड़ किया स्वप्न में
मच्छड़ को मारी थी लात ।’

उसके इस उत्तर से लेकिन
हुआ नहीं राजा संतुष्ट,
मान लिया उसने मन ही मन
दन्तिल है सचमुच ही दुष्ट ।

भेज सूचना दी यह फौरन
तब उसने दन्तिल के नाम—
‘राजमहल में आये अब तो
होगा तेरा काम तमाम !’



राजा की सुनकर यह आज्ञा
दन्तिल हुआ बहुत हैरान,
नहीं समझ में आया उसको
क्यों निकला ऐसा क्रमान ।

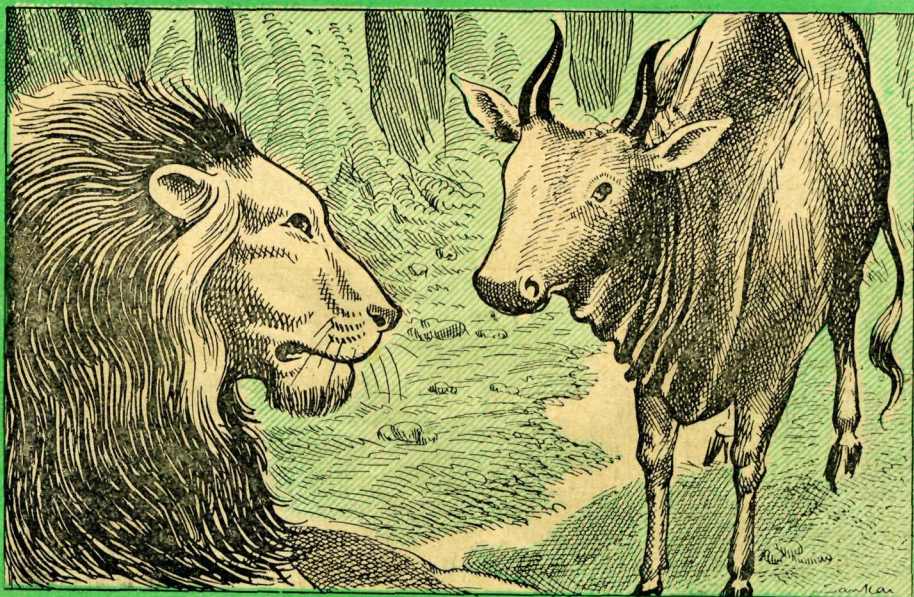
देखा उसने गोरंभक के
मुख पर खेल रही मुस्कान,
सारी है करतूत इसी की
लिया तुरत उसने यह जान ।

फिर तो उसने गोरंभक को
दिया बहुत रुपये का दान,
जिससे खुश हो गया तुरत वह
भूल गया पिछला अपमान ।

और एक दिन फिर जब बैठा
निद्रित-सा राजा के पास,
लगा बोलने अपने से ही
करता-सा मानो परिहास—

“राजा साहब का कैसा है
अद्भुत बेढंगा आचार,
उठ जाते हैं तड़के तड़के
कर लेते सस्ता आहार !”

सुनकर राजा ने यह सोचा—
यों ही बड़बड़ करता दास,
इसके सपने की बातों पर
ठीक नहीं करना विश्वास ।



इस प्रकार संशय मिटते ही
दन्तिल के जागे फिर भाग्य,
राजकृपा भी मिली पूर्ववत्
सुख का सुलभ हुआ साम्राज्य ।

इसीलिए कहता संजीवक,
रखना मुझको भी तुम यदि ;
मित्र समझ खुद को राजा का
गर्व न करना मन में बाद !”

यों कह संजीवक को दमनक
लेकर गया जिधर था शेर,
देख उन्हें झट पिंगलक बोला—
“आओ मित्र, लगा दी देर ;

देख रहा था मैं अधीर हो
कब से तुम दोनों की राह,
इस वन के हैं भाग्य जगे जो
भूल पड़े नन्दीवर राह !”

फिर बोला संजीवक से वह—
“हम दोनों हैं अब से भीत,
जिधर बढ़ेंगे चरण हमारे
होंगे उधर सभी हो भीत ।

रहें आप अब साथ सदा ही
हो न सकेगा बाँका बाल,
अगर सताया ज़रा किसी ने
हो जाऊँगा उसका काल ।”

बैल और वन के राजा की
मैत्री बढ़ी आप ही आप,
पड़ी क्रमशः हिंसक पर भी
बैल अहिंसक की मृदु छाप ।

साथ बैल के सदा विचरना
और साथ ही सदा विहार,
धीरे धीरे हिंस्र शेर ने
छोड़ दिया अति क्रूर शिकार !

जूठनजीवी करटक दमनक
यों लखकर राजा का हाल,
हुए झुधा से औ’ चिन्ता से
बहुत बहुत ही फिर बेहाल ।

करटक बोला—“भाई दमनक,
हुई तुम्हीं से है यह भूल !
मेल कराकर बैल-सिंह का
किया तुम्हीं ने सब प्रतिकूल !”

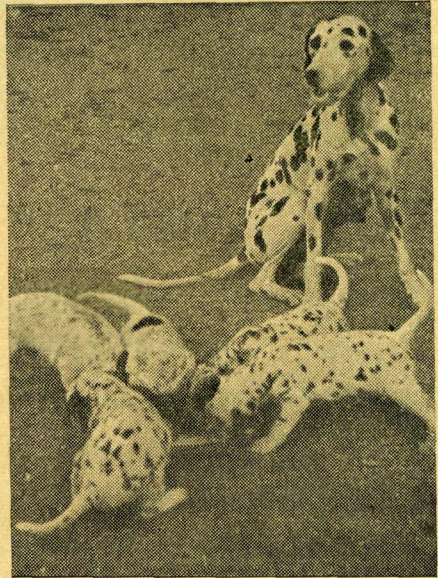
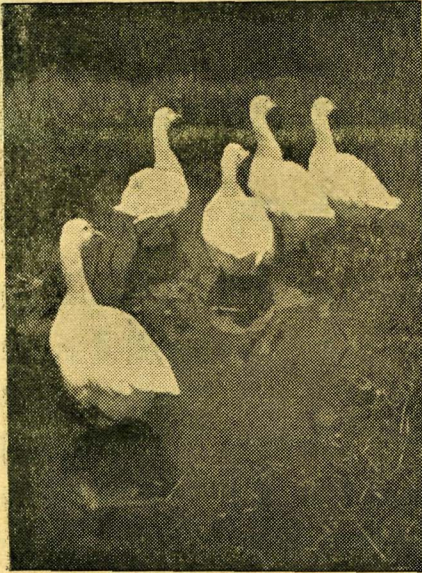


फोटो - परिचयोक्ति - प्रतियोगिता

फरवरी १९५७

::

पारितोषिक १०)



कृपया परिचयोक्तियाँ कार्ड पर ही भेजें ।

ऊपर के फोटो के लिए उपयुक्त परिचयोक्तियाँ चाहिए । परिचयोक्तियाँ दो-तीन शब्द की हों और परस्पर संबन्धित हों । परिचयोक्तियाँ पूरे नाम और पते के साथ कार्ड पर ही

लिख कर निम्नलिखित पते पर ता. ५ दिसम्बर के अन्दर भेजनी चाहिये ।

फोटो - परिचयोक्ति - प्रतियोगिता

चन्द्रामामा प्रकाशन

वड़पलनी :: मद्रास - २६

दिसम्बर - प्रतियोगिता - फल

दिसम्बर के फोटो के लिये निम्नलिखित परिचयोक्तियाँ चुनी गई हैं ।

इनके प्रेषक को १० रु. का पुरस्कार मिलेगा ।

पहिला फोटो :

जले ज्योति, छाये उजियाला !

प्रेषक : श्री प्रभुदयाल बगड़िया, उमरिया (विन्ध्य प्रदेश) रीवा ।

दूसरा फोटो :

देख रही मैं जग को आली !



चूड़ी रिबन में पहुँचाना

जादूगर को एक चूड़ी लेनी चाहिये। पर ध्यान रहे कि चूड़ी में कोई जोड़ नहीं होना चाहिये। तब जादूगर के हाथों को तागे से, नहीं तो रिबन से बाँध देना चाहिये। गाँठ बाँधकर उस पर सील भी लगाई जा सकती है। फिर उसके हाथ में चूड़ी रखकर, उसको रुमाल या बड़े तौलिये से ढँक देना चाहिये।

अगले क्षण तौलिया हटाने पर, वह चूड़ी रिबन में पहुँच गई होगी। उसके हाथ में बँधा रिबन कहीं भी कटा न हुआ होगा। गाँठ की सील भी ठीक होगी। यह भी नहीं लगता कि चूड़ी कहीं चिपका दी गई हो। तो फिर वह चूड़ी रिबन में कैसे पहुँच गई? फिर तौलिया हाथ

पर डालकर हटा देने से, जादूगर चूड़ी निकाल कर सबको दिखाता है। साथ के चित्र में यह दिखाया गया है कि जादूगर के हाथ में बँधे रिबन में, चूड़ी आ गई है, और जादूगर का सहायक तौलिया लिये खड़ा बगल में है। सच कहा जाय तो यह जादू बहुत सरल है।

इस जादू के लिए एक ही तरह की, दो बराबर चूड़ियाँ चाहिये। एक चूड़ी को जादूगर पहिले ही हाथ पर पहिने हुए होता है। क्योंकि वह कोट के अन्दर छुपी हुई होती है इसलिये वह किसी को नहीं दिखाई देती। प्रेक्षकों द्वारा दी गई चूड़ी को, तौलिये के डालने पर वह कोट की जेब में, नहीं तो कोट के बटनों के नीचे छुपा, देता है।

और तब जादूगर पहिले की पहिनी तभी इस जादू को अच्छी तरह
हुई चूड़ी को, सरकाकर रिबन तक किया जा सकता है। पहिले अभ्यास
ले आता है। सब सोचने लगते हैं कि करके ही यह जादू पाँच दस
उन्हीं की दी हुई चूड़ी रिबन तक आदमियों के सामने करना चाहिये।
आई है और वे चकित हो जाते हैं। फिर उसके बाद आम सभा में
फिर तौलिये के ढ़कने पर वह रिबन इसको दिखाना चाहिए।

में पड़ी हुई
चूड़ी को फिर
शान से कोट में
पहुँचा देता है।
और जेब में रखी
चूड़ी को निकाल
कर गम्भीरता
से प्रेक्षकों को
दिखाता है।

यह जादू
करते समय—
जादूगर को इस
बात का ध्यान
रखना चाहिए कि
उसके हाव-भाव,
तौर-तरीका ऐसा
होना चाहिये कि
किसी को कोई
सन्देह न हो।





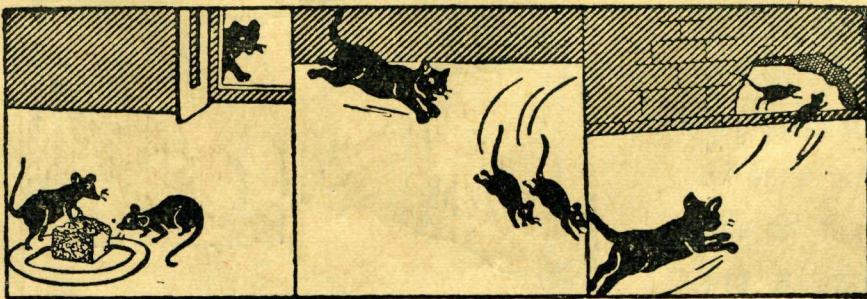
समाचार वगैरह

इधर उत्तर प्रदेश के कई गांवों में प्राचीन वस्तुओं और स्थानों के अवशेष मिले हैं। कानपुर ज़िले का जाजमऊ नामक स्थान में मौर्यकाल के कुछ अवशेष मिले हैं। इसी ज़िले के नरेली ग्राम में कुशान काल के अवशेषों के अतिरिक्त दसवीं शती की एक विष्णु की मूर्ति भी मिली है। शाहजहाँपुर ज़िले के निमोही ग्राम में तुगलक और खिलजी काल के कुछ सिक्के और भवनों के अंश प्राप्त हुए हैं। बस्ती और गोरखपुर ज़िले में आमी नदी के किनारे मीलों तक पुराने टोलों

और ढ़हों की पंक्ति मिली है, जो पुराने नगरों के अवशेष हैं। प्रान्त के पुरातत्व संबंधी सर्वेक्षण और अनुसंधान करने के लिए उत्तर प्रदेश सरकार ने एक पुरातत्व अधिकारी की नियुक्ति की है।

* * *

काशी नागरी प्रचारिणी सभा ने हिन्दी के उपन्यास सम्राट स्व० प्रेमचन्द जी के जन्मस्थान, लमही गाँव में, जो बनारस से पाँच मील दूर आजमगढ़ मार्ग पर स्थित है, उनके लिए स्मारक बनाने को १ लाख १६ हजार रुपये की योजना बनायी है



और इस स्मारक मंडल के संयोजक हैं श्री गोविन्द प्रसाद कंजरीवाल। प्रधान मंत्री श्री नेहरू जी ने नागरी प्रचारिणी सभा द्वारा किये जानेवाले इस प्रयास की बड़ी सरहाना की है।

* * *

पता चला है कि शिकागो झील के तट पर एक मील ऊँचे गगनचुम्बी विशाल भवन के निर्माण के सम्बन्ध में ८७ वर्षीय अमेरिकी इंजीनीयर फ्रैंक लायड रायट ने एक डिज़ाइन तैयार किया है। यह भवन कांच और इस्पात का बनाया जाएगा।

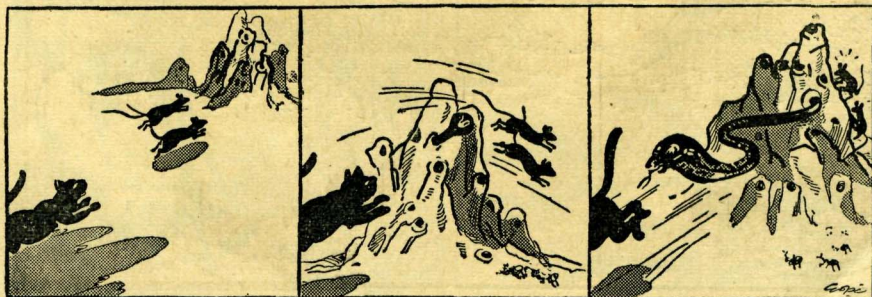
* * *

समाचार पत्रों से मालूम हुआ कि पिछले कुछ दिनों से एक एयर कंडीशन रेल गाड़ी दिल्ली और कलकत्ते के बीच चलने लगी है। इस गाड़ी में एयर कंडीशन (वातानुकूल) यंत्र लगाये गये

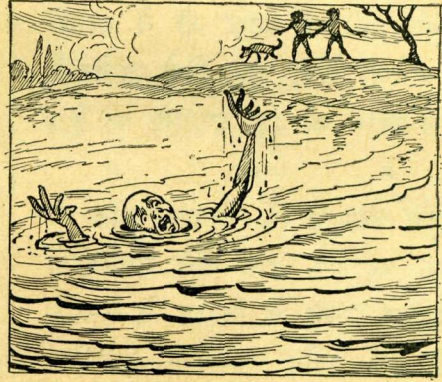
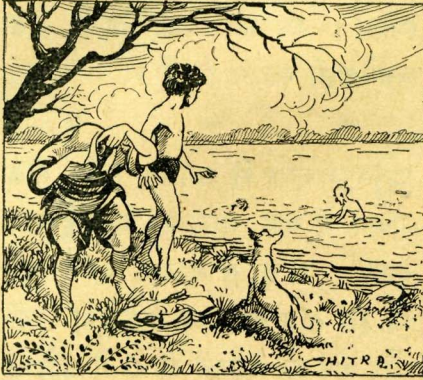
हैं, जिससे गर्मियों में गर्मी महसूस नहीं होती और जाड़े में जाड़ा भी नहीं लगता। यह भारत की सब से तेज़ चलनेवाली रेल गाड़ी है।

* * *

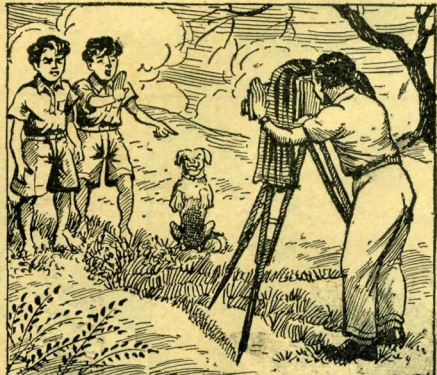
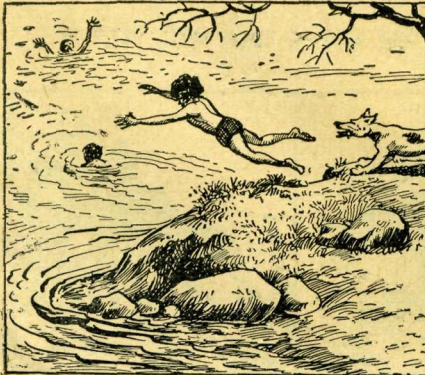
जोधपुर नगर से लगभग १०० मील पश्चिम में एक छोटा-सा गाँव है-राम देवरा। आज से लगभग ६०० वर्ष पूर्व इस गाँव का नाम 'रूणेचा' था और अब भी देहाती क्षोत्रों में रूणेचा ही कहलाता है। प्रत्येक वर्ष भाद्रमास में यहाँ एक बहुत बड़ा मेला लगता है, जिसमें लाखों व्यक्ति यहाँ के स्थानीय संत रामदेव जी के मन्दिर का दर्शन करने आते हैं। इस मेले की तथा इस मन्दिर की विशेषता यह रही है कि यहाँ सभी वर्ग तथा सभी वर्ण के लोग बिना भेद-भाव के दर्शन करने आते हैं।

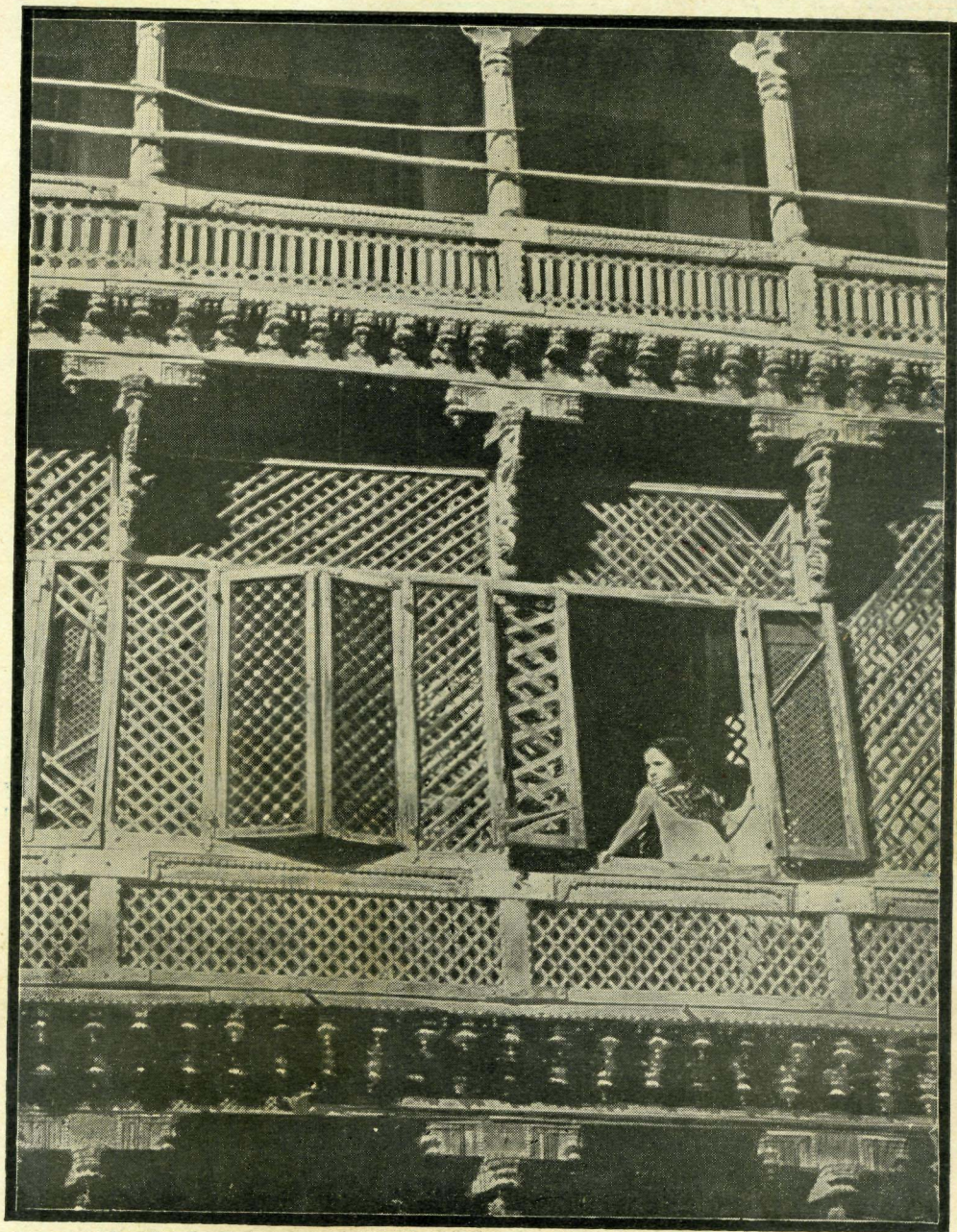


चित्र - कथा



एक दिन दास और वास ने बीमारी का बहाना कर स्कूल से छुट्टी ली। फिर दोनों नहाने के लिए नदी किनारे चल पड़े। जब वे नहाने की सोच रहे थे, तब उन्होंने नदी में डूबते हुए एक बूढ़े आदमी की आवाज़ सुनी। दास और वास ने नदी में कूदकर उसे बाहर निकाला। उनकी बहादुरी से प्रभावित होकर एक फोटोग्राफर ने उन दोनों की फोटो लेनी चाही। पर वे नहीं माने। उन्होंने 'टाइगर' की फोटो लेने को कहा; क्योंकि वे बीमारी का बहाना करके छुट्टी मना रहे थे। अगर यह बात मास्टर जी को मालूम हो जाती तो उन पर मार पड़ती।





पुरस्कृत
परिचयोक्ति

देख रही मैं जग को आली !!

प्रेषक :

श्री प्रभुदयाल बगड़िया, उमरिया



भुवन - सुन्दरी